सत्यमेव जयते

महानिदेशक लेखा परीक्षा, (केंद्रीय)
का कार्यालय, महाराष्ट्र, मुंबई - 400 051

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सह्याद्रि

37 वाँ अंक वर्ष 2023

अम्बेडकर जयंती की झलकियाँ

वर्ष 2023 अंक 37 वाँ

सत्यमेव जयते

सह्याद्रि

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय

सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा - कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 51.

मुखपृष्ठ

मुखपृष्ठ : कार्यालय महानिदेशक (कें) लेखापरीक्षा, मुंबई के परिसर के पेड़ पर आनंद लेता हुआ छोटा बसंता

फोटो साभार: श्री देवेन्द्र, निदेशक/राजभाषा

कोपरस्मिथ बारबेट (छोटा बसंता) एक एशियाई बारबेट है, जो भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया में पाया जाता है। यह ज्यादातर बगीचों, पेड़ों और विरल वुडलैंड में निवास करता है। जबकि इसकी तालमापी के समान आवाज़ संदिग्ध है, इसे ढूंढना मुश्किल हो सकता है क्योंकि इसका छलावरण और छोटा आकर इसे आसानी से पत्तियों के बीच छिपा देता है।

यह ऊंचे पेड़ों की ऊपरी, सुखी शाखाओं पर धूप का आनंद लेते हुए अपनी तेज आवाज़ निकालना पसंद करता है। इसके टुक-टुक-टुक के पुकार की ताल प्रति मिनट 108 से ले कर 204 बार तक हो सकती है। कॉल करते समय, चोंच बंद रहती है और गले के दोनों किनारों पर त्वचा का एक भाग फैलता-सिकुड़ता है, और प्रत्येक पुकार के साथ-साथ इसका सिर भी ऊपर-नीचे हिलता है।नर और मादा दोनों समान दिखते हैं।

सह्याद्रि परिवार

संरक्षक

श्री. के. पी. यादव

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंम्बई

प्रकाशन

सह्याद्रि (हिन्दी पत्रिका 37 वां अंक)

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय) का कार्यालय, मुम्बई - 400 051, महाराष्ट्र

प्रधान संपादक

श्री.पद्माकर कुशवाहा

निदेशक

मुख्य संपादक

सुश्री पूर्णिमा. एस.

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री.रणजीत सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

सुश्री वाणी विशालाक्षी

वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री.बिना कुमारी राय

कनिष्ठ अनुवादक

"पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।"

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय		पृ.क्र.
1.	अम्बेडकर जयंती की झलकियाँ		1
2.	सह्याद्रि अंक		2
3.	सह्याद्रि परिवार		3
4.	अनुक्रमणिका		4 - 5
5.	संरक्षक की कलम से		6
6.	सन्देश		7
7.	आपके पत्र		8 - 9
8.	डाटा अभियान	श्री केरल प्रसाद यादव / महानिदेशक	10 - 15
9.	धम्म-वचन : तिलक्खण	पदमाकर कुशवाहा, निदेशक	16 - 23
10.	चित्रकला	कु. कृति कुशवाहा	23
11.	'महासमर' पुस्तक की समीक्षा	राकेश कुमार सिंह / सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	24 - 25
12.	हाँ ये पुरुष है	निलेश जाधव / कल्याण सहायक	26
13.	बात कड़वी है, असहनीय है।	राकेश कुमार सिंह / सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	27
14.	मेरा गुस्सा	मधु सिंह / सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	28
15.	हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ		29
16.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक की झलकियाँ		30
17.	जीवन का उद्देश्य या लक्ष्य	मुनिनाथ यादव / सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	31 - 33
18.	चित्रकला	सुश्री पूर्णिमा एस / व.ले.प.अ.	34
19.	चित्रकला	सुश्री श्रेया सवने	35
20.	चित्रकला	सुश्री रीता प्रमोद / व.ले.प.अ.	36
21.	सफ़र: दर्शक दीर्घा से राजभाषा चैम्पियन तक	श्री कुमार सौरभ / लेखापरीक्षक	37 - 40
22.	अंतर्द्वंद्व	डॉ. दिनेश सिंह	41
23.	मुक्तक	डॉ. दिनेश सिंह	42

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय		पृ.क्र.
24.	टाइम मशीन विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ		43
25.	पुस्तक की आत्मकथा	एन दलवी / लेखापरिक्षक	44
26.	हमारी एक अनमोल रातें	श्री रजनीश वर्मा / सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	45
27.	कार्यकुशलता के साथ व्यवहारकुशलता भी ज़रूरी	श्री कुमार सौरभ / लेखापरीक्षक	46 - 47
28.	वर्तनी की अशुद्धियाँ	श्री रंजय कुमार सिंह / लेखा परीक्षक	48
29.	पिता	संगीता लक्ष्मण दोडमणी	49
30.	चित्रकला	सुश्री पूर्णिमा एस / व.ले.प.अ.	50
31.	राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस पर शपथ ग्रहण		51
32.	महिला सशक्तिकरण पर अनमोल विचार	श्री केरल प्रसाद यादव महानिदेशक	52 - 53
33.	खेलकूद संबंधित उपलब्धियाँ		54

सह्याद्रि

संरक्षक की कलम से

मैं आपको हमारी हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 37वें अंक की प्रस्तुति पर हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस प्रकाशन के माध्यम से, हम राजभाषा हिंदी के प्रति आपके प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा, और समर्पण को प्रकट कर रहे हैं।

हमारी हिंदी पत्रिका कार्यालय के सभी कर्मचारियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जो राजभाषा हिंदी में विशेष रुचि रखने वाले सभी कर्मिकों के कौशल को प्रदर्शित करता है। हमारी पत्रिका "सह्याद्रि" हमेशा से ही हिंदी भाषा के प्रति आदर और समर्पण से युक्त रही है, और इस बार भी हम अपने पाठकों को हिंदी भाषा के समृद्धता और विस्तार को प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें गर्व है कि हम इस पत्रिका के माध्यम से साहित्यिक सृजनशील कर्मचारियों को उनकी रचनाओं की प्रस्तुति का उचित मंच प्रदान कर रहे हैं।

37वें अंक के सफल संपादन के लिए, मैं संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ। मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं कि पत्रिका और उसका भविष्य सदैव प्रगतिशील रहें और आप सभी अपने कर्तव्यों का समुचित पालन करते हुए इस पत्रिका के माध्यम से नवीनता लाएँ धन्यवाद और शुभकामनाएँ।

के.पी.यादव
महानिदेशक

सन्देश

हमारी हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 37वें संस्करण के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत गौरव और हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका विभागाधीन कार्यालयों के कर्मिकों की सृजनात्मकता को पल्लवित करने और हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन का कारण इस कार्यालय के कर्मिकों की रचनात्मकता और उनका तत्परता से दिया गया योगदान है। यह पत्रिका उनकी राजभाषा हिंदी के प्रति विशेष रूचि को दर्शाती है।

मैं संपादक मंडल, सभी रचनाकारों और प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी कर्मिकों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रेरणादायक प्रकाशन से और अधिक पाठक हिंदी की ओर प्रवृत्त होंगे।

पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता की उज्ज्वल कामनाएं सहित।

धन्यवाद और शुभकामनाएं।

देवेन्द्र
निदेशक / प्रशासन

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, नागपुर

O/o Principal Chief Commissioner Of Income Tax

तीसरी मंजिल, 'आयकर भवन', तेलंगखेड़ी रोड, सिविल लाइन्स, नागपुर-440001

3rd Floor, Aayakar Bhawan, Telangkhedi Road, Civil Lines, Nagpur-440001

☎ (0712) 2561942, 2808574, फैक्स नं. / Fax no. (0712) 2561942

फा.सं. प्र.मु.आ.आ./नाग/पत्रिका/प्रतिक्रियाएं/2023-24/114 दिनांक: 20/04/2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल,
बांद्रा(पूर्व), मुंबई-400 051

विषयः महानिदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 36वें अंक के लिए प्रतिक्रिया प्रेषणः-

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र .सं./म.नि.ले.प.(के.)/रा.भा.अ./सह्याद्रि 36वाँ अंक/72 दि.20/03/2023 के साथ महानिदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 36वें अंक की प्रति की प्राप्ति हुई। आपका बहुत- बहुत धन्यवाद।

इस पत्रिका के संबंध में प्रतिक्रिया इस प्रकार हैः- इस पत्रिका का मुख्यपृष्ठ व अंतिमपृष्ठ तथा आंतरिक साज सज्जा काफी आकर्षक है। पत्रिका में गणतंत्र दिवस 2023, विलय(मर्जर) और अधिग्रहण विषय पर आयोजित कार्यशाला, अंतर्राष्ट्रीय कर पर आयोजित कार्यशाला, श्रेष्ठतम प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार वितरण समारोह, कार्यालय में आयोजित चिकित्सा शिविर, यौन शोषण अधिनियम विषय पर आयोजित कार्यशाला, सतर्कता जागरूकता विषय पर आयोजित कार्यशाला, ऑडिट दिवस पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रतिभागीगण, हिंदी पखवाड़ा समारोह की विभिन्न प्रतियोगिताओं, हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह आदि विभिन्न गतिविधियों की झलकियों के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई। सभी आयोजनों के छायाचित्र काफी आकर्षक हैं तथा सभी सामग्री सूचनाप्रद है।

इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान के लिए किया जा रहा आपका प्रयास बहुत ही सराहनीय है। सभी रचनाएं श्रेष्ठ है। फिर भी कुछ रचनाओं का उल्लेख यहां करना चाहता हूं। जैसे:- **डाटा अभियान, नए साल आते हैं, मैं धरती हूँ, मेरा प्यारा घर, थोड़ा वक्त दो मुझे, सावन, एक सफल कोशिश, सफर** आदि के माध्यम से रचनाकारों की लेखनी की मजबूती का पता चलता है। **"जिंदगी भी किताब के एक पन्ने से"** के माध्यम से सुश्री संगीता सिंह ने न केवल अपने सुखद अनुभव साझा किए बल्कि आजकल के युवा जो अपने माता-पिता की हिदायतों को नियंत्रण समझते हैं, उन्हें महत्वपूर्ण सीख भी दी है। ऐसी सशक्त रचनाओं से पत्रिका का मूल्यवर्धन हुआ है।

विभिन्न रचनाओं से पाठकों के ज्ञान में वृद्धि हुई है। निश्चित ही यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी और इसी प्रकार आगे भी अभिव्यक्ति का सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
20/4/23
(अनिल त्रिपाठी)
सहायक निदेशक (राजभाषा)
संपादक, आयकर वीणा
कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, नागपुर

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/279
दिनांक/Dated:23.03.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई,
सी-25 आडिट भवन, बांद्रा कुर्ला काम्पलैक्स,
मुंबई-400 051

विषय: राजभाषा हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' के 36वां अंक का प्रेषण संबंधित।

महोदया,

प.सं./म.नि.ले.प.(के)/रा.भा.अ./सह्याद्रि 36वां अंक/69 दिनांक 20.03.2023 द्वारा आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' के 36वां अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'जिंदगी की किताब के एक पन्ने से', 'थोड़ा वक्त दो मुझे', 'हिंदी भाषा से संबंधित कुछ रोचक जानकारियां', 'हिंदी-तमिल मिलाप' एवं 'सावन' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (ले० व०) हरियाणा का कार्यालय लेखा भवन, प्लॉट नं० 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चंडीगढ़-160020 टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172-2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E)HARYANA, CHANDIGARH-160020 EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail- agaeharyana@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

कक्ष/पत्रि. प्रति/2023-2024/19
दिनांक: 18.04.2023

सेवा मे

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
मुंबई।

विषय: राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'सह्याद्रि' 36वां अंक के प्रेषण से संबन्धित।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 21.03.2023 के द्वारा कार्यालय हिन्दी पत्रिका सह्याद्रि' 36वां अंक के पेषण की प्राप्ति सधन्यवाद हुई है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री हेमंत का लेख 'भगवान का बगीचा', सुश्री वाणी विशालाक्षी का लेख 'हिन्दी तमिल मिलाप', श्री राकेश कुमार सिंह का लेख 'भारत के संविधान के अंतर्गत स्वतन्त्रता का अधिकार, श्री रजनीश वर्मा का लेख 'सफर' तथा सुश्री नंदिता का लेख आ. शिवशरण का लेख 'एक सफल कोशिश' ज्ञानवर्धक है।

इसके अतिरिक्त श्री रजनीश वर्मा की कविता 'मन की व्यथा', श्री अंकुश आत्माराम बने की कविता 'एक था राजू' तथा डा. पप्पू प्रसाद शाह की कविता 'थोड़ा वक्त दो मुझे' पठनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया
पूजा सिंह
हिन्दी अधिकारी

भारत सरकार/GOVT.OF INDIA

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001

O/O THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR -751001

स.रा.भा.अ./प.प्रति./37/2022-23/ 10 दिनांक: 11/04/2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ राजभाषा
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, मुंबई
सी-25 ऑडिट भवन, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स
मुंबई -400051

विषयः- हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 36वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 36वें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत अच्छी है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। विशेष रूप से "डाटा अभियान, मैं धरती हूँ, जिंदगी की किताब के एक पन्ने से, हिन्दी भाषा से संबंधित कुछ रोचक जानकारियाँ" आदि रचनाएं रोचक, सारगर्भित एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,
11/4/23
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं./Phone No: 0281-2441600-06 (पीबीएक्स/PBX) फैक्स नं./Fax No: 0281-2456238 ईमेल/Email: agaegujarat@cag.gov.in

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/ 162
दिनांक: 30.03.2023

सेवा में,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल,
बांद्रा-कुर्ला, महाराष्ट्र, मुंबई-400051

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "सह्याद्रि" के 36 वें संस्करण के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका "सह्याद्रि" के 36 वें संस्करण की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, मा. श्री केरल प्रसाद यादव जी की रचना "डाटा अभियान", सुश्री नविता यादव की रचना "नए साल आते हैं", श्री राहुल वर्मा की रचना "मैं धरती हूँ", सुश्री संगीता सिंह की रचना "जिंदगी की किताब के एक पन्ने से", कुमारी अंजलि की चित्रकला", डॉ.पुष्प प्रसाद साह (प्रसाद) की रचना "थोड़ा वक्त दो मुझे", श्री हेमंत की रचना "भगवान का बगीचा (मोलिंगनॉन्ग गाँव)", श्री कुमार सौरभ की रचना "हिंदी भाषा से संबंधित कुछ रोचक जानकारियाँ", सुश्री वाणी विशालाक्षी की रचना "हिंदी-तमिल मिलाप", कुमारी वृंदा मधु की चित्रकला", सुश्री नंदिता आ. शिवचरण की रचना "एक सफल कोशिश", श्री राकेश कुमार सिंह की रचना "भारत के संविधान के तहत स्वतंत्रता का अधिकार", श्री अंकुच आत्माराम बने की रचना "एक था राजू (भावपूर्ण श्रंधाजलि), श्री रजनीश वर्मा की रचना "सफर", सुश्री श्रीलता एस.एम की रचना "बीबी का मकबरा", "आदि रचनाएँ विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। दोनों बालिका चित्रकारों को उनके सुनहरे भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

पत्रिका के माध्यम से "ख" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका का मुख पृष्ठ और अंतिम पृष्ठ सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत उत्तम है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियां पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

संख्या / No. रा.भा.क./पत्रिका/के-1/2022-23 1750
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.)राजस्थान
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL(A&E), RAJASTHAN
दिनांक / Date 23/3/2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
महाराष्ट्र, मुम्बई- 400 051

विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 36वें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 36वें अंक की प्राप्ति हुई है, अतः आपको बहुत-बहुत साधुवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं। ये रचनाएँ राजभाषा के सम्बंधित नीतियों के अनुपालन तथा प्रचार-प्रसार हेतु बनाये गए विविध कार्यक्रमों में यह बहुत ही उपयोगी एवं सहायक हैं। पत्रिका में सम्मिलित सुश्री संगीता सिंह की कहानी "जिन्दगी की किताब के एक पन्ने से", श्री अंकुश आत्माराम बने की कविता "एक था राजू" तथा सुश्री श्रीलता एस.एम. का लेख "बीबी का मकबरा" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

भवदीय,

प्रभारी अधिकारी,
राजभाषा कक्ष (लेखा व हक़.)

जनपथ, जयपुर-302005, दूरभाष :(0141)2385431-39, फैक्स:(0141)2385263
Janpath, Jaipur- 302005, Tel.: (0141)2385431-39, Fax : (0141) 2385263
ई मेल / E-Mail : agaerajasthan@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, अगरतला- 799 006

संख्याः हिन्दी अनु./ अन्य कार्यालय पत्रिका/ 2022-23/120 दिनांकः 28.04.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केन्द्रीय) का कार्यालय
महाराष्ट्र, मुंबई - 400 051

विषयः पत्रिका 'सहयाद्रि' के 36वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर आपके कार्यालय के पत्र प.सं./म.नि.ले.प.(के.)/रा.भा.अ./सहयाद्रि 36वाँ अंक/जा.सं. 69 दिनांकः 20.03.2023 के साथ कार्यालयीन पत्रिका 'सहयाद्रि' के 36वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुयी। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का यह अंक साहित्यिक खुशबू से परिपूर्ण है। विशेषकर **श्रीमती नंदिता आ. शिवशरण** द्वारा रचित लेख **"दोस्ती"** अतीत की अविस्मरणीय यात्रा में ले जाकर दोस्ती की मीठी यादें तरोताजा कर देती है। **श्री राहुल कुमार वर्मा** की कविता **"मैं धरती हूँ"** में वसुधा के साकार मानवीकरण द्वारा उद्धित अनेकों पंक्तियाँ मन को छू देती है,

"कहते हैं सब मुझको माता
मुझको तो बच्चों नें बांटा,
कर दिये हैं टुकड़े अनेक
फिर भी मैं तो हूँ एक,
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ"

आशा करता हूं कि आपकी पत्रिका अपने नए विचारों से हमें अवगत कराती रहेगी एवं भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देती रहेगी।

'सहयाद्रि' पत्रिका के सफलता की मंगलकामनाएं !

सधन्यवाद।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

ए.हादा/पत्राका/4941/2022-23

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, ब्लॉक-ए,सातवाँ तल, रक्षा कार्यालय परिसर, अफ्रीका अवेन्यू, नई दिल्ली-110023
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT, DEFENCE SERVICES,
7th FLOOR, A-BLOCK, DEFENCE OFFICE COMPLEX, AFRICA AVENUE, NEW DELHI - 110023
Telephone23094669 ,23092583 ,23093672 ,23094219 – (011) : दूरभाष/ ;
Fax: 23092301

संख्या: ए.हिंदी/अन्य पत्रिका/2023-24 2065
दिनांक :- 27/07/2023 28

महोदया,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

सी-25,ऑडिट भवन,बांद्रा कुर्ला काम्प्लेक्स,

महाराष्ट्र, मुंबई-400051

विषय:- हिन्दी गृह पत्रिका 'सहयाद्री' के 36 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय दवारा प्रकाशित पत्रिका 'सहयाद्री' के 36 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है; विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छाया चित्रों का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। 'सहयाद्री' राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है।सभी रचनाओं में से विशेषकर श्री राहुल कुमार वर्मा की कविता "मैं धरती हूँ" , सुश्री संगीता सिंह की रचना "ज़िन्दगी की किताब के एक पन्ने से", श्री रजनीश वर्मा की रचना "सावन" एवं श्रीमती नंदिता आ. शिवशरण की रचना "एक सफल कोशिश" अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं। राजभाषा हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'सहयाद्री' के उज्जवल भविष्य के लिए अभिलाषा परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(राजीव कुमार)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी अनुभाग
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

(क) मानव विकास सूचकांक (HDI)

श्री के.पी. यादव
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

मानव विकास सूचकांक पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब-उल हक द्वारा प्रतिपादित किया गया था। उन्होंने मानव विकास के तीन प्रमुख आयामों को प्रदर्शित करने के लिए मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई) प्रतिपादित किया।

मानव विकास सूचकांक एक लंबा स्वस्थ जीवन, शिक्षा तथा उच्च जीवन स्तर का चित्रण करता है।

UNDP HDI 2021 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की रैंकिंग 132 है।

किसी राष्ट्र के समग्र विकास की गणना के लिए, विकास के सामाजिक मापदण्डों का निर्धारण भी करता है। साथ ही यह प्रदर्शित करता है कि किसी राष्ट्र ने सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में कितना प्रभावशाली योगदान दिया है।

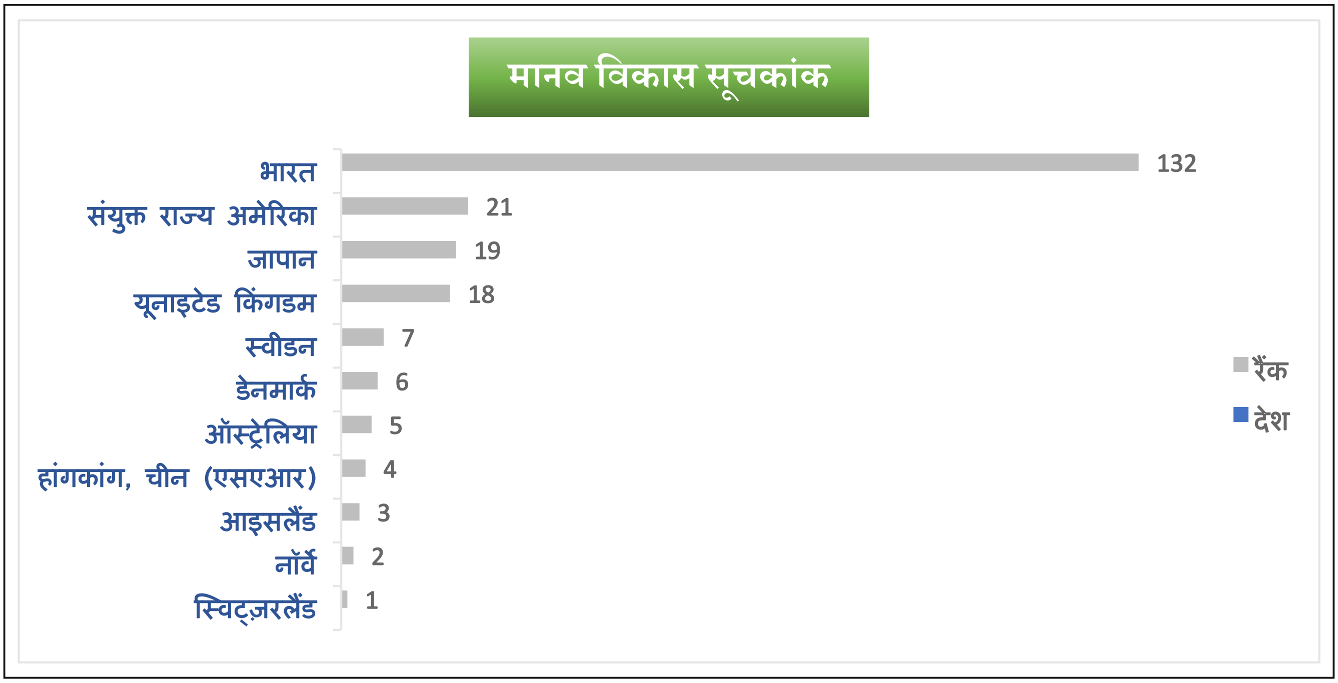

स्रोत : द इकोनोमिक टाइम्स अख़बार से

(ख) विलय एवं अधिग्रहण (Mergers and Acquisitions)

भारत में विलय एवं अधिग्रहण की संख्या तथा मूल्य (Value) में सतत वृद्धि हुई है। 2013 से 2023 तक घरेलू विलय एवं अधिग्रहण की स्थिति निम्न है।

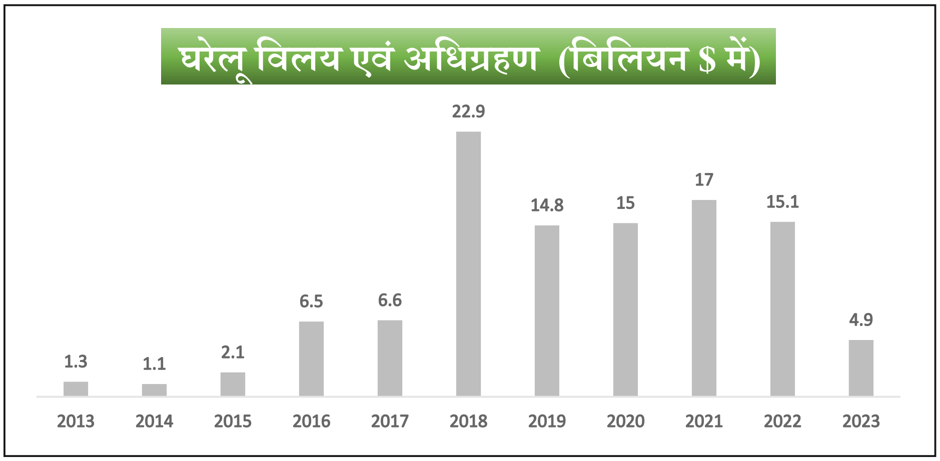

स्रोत : फाइनेंसियल एक्सप्रेस (डेटा ड्राइव) अख़बार से

घरेलू विलय एवं अधिग्रहण की अपेक्षा विदेशी विलय एवं अधिग्रहण की संख्या एवं मूल्य में कमी आई है इसका विवरण नीचे दर्शाया गया है।

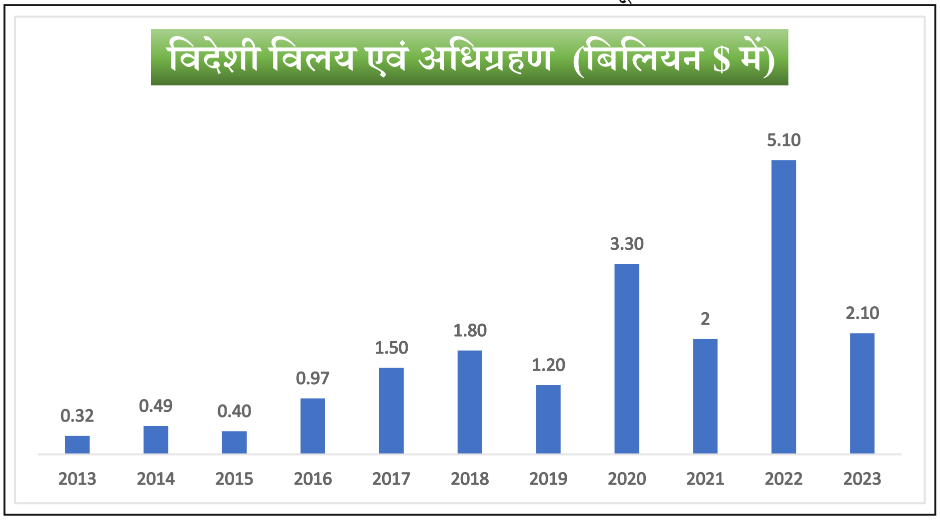

अगर क्षेत्रवार विश्लेषण किया जाये तो सबसे अधिक विलय एवं अधिग्रहण औद्योगिक क्षेत्र में हुआ है तथा रियल एस्टेट में सबसे कम देखने को मिलता है।

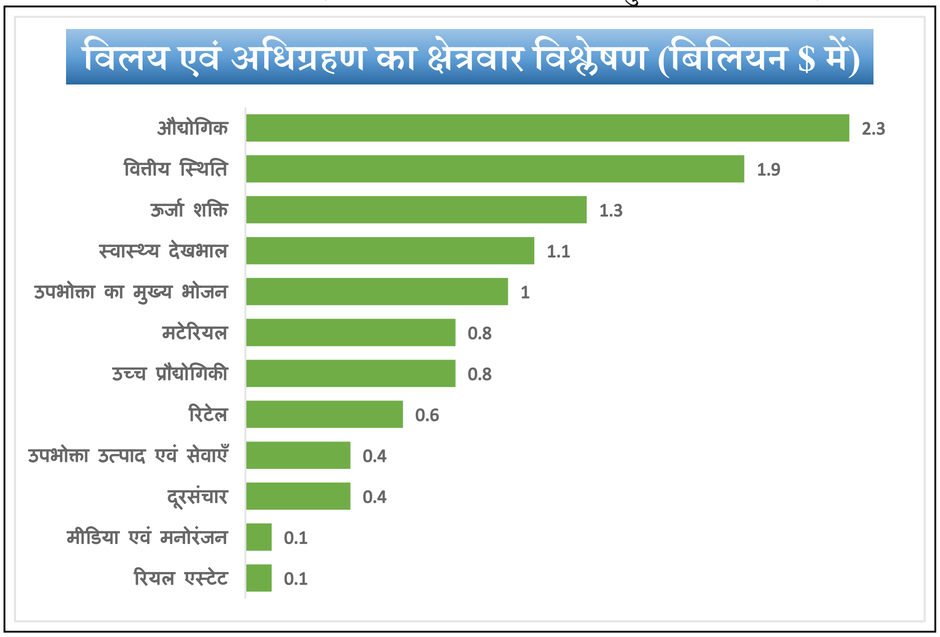

(ग) बैंक धोखाधड़ी

बैंक परिचालन संबंधी धोखाधड़ी में **2021-22** की तुलना में **2022-23** में वृद्धि हुई है। **2021-22** में धोखाधड़ी के **4069** मामले थे जिसमें **36,316** रुपए तथा **2022-23** के दौरान **5,446** मामलों में **19,485** रुपए की धोखाधड़ी हुई है।

बैंक परिचालन संबंधी धोखाधड़ी (? करोड़ में)				
	2021-22		2022-23	
	धोखाधड़ी की संख्या	सम्मिलित राशि	धोखाधड़ी की संख्या	सम्मिलित राशि
अग्रिम	1,800	35,034	2,006	18,746
ऑफ बैलेंस शीट (OBS)	10	612	5	283
विदेशी मुद्रा लेनदेन	1	0	10	3
कार्ड/इंटरनेट	1,532	60	2,321	87
जमा (Deposits)	208	362	270	135
अंतर-शाखा खाते	0	0	2	0
नकद	245	51	589	81
चेक/डीडी इत्यादि	107	149	73	12
समाशोधन खाते, इत्यादि	9	1	11	2
अन्य	**157**	**47**	**119**	**136**
कुल	**4,069**	**36,316**	**5,406**	**19,485**

स्रोत: भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति और प्रगति पर आर.बी.आई. रिपोर्ट **2021-22.**

(घ) भारतीय रेलवे में सुरक्षा

हाल ही में हुई ओडिशा की तीन ट्रेनों की दुर्घटना ने भारतीय रेलवे में सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिए है। ताजा बजट से पता चलता है कि रेलवे पर खर्च 5 ट्रिलियन को पार कर गया है। 2017-18 में लगभग 37 प्रतिशत की तुलना में पूंजीगत व्यय पर खर्च किया गया धन 50 प्रतिशत के करीब है। अतिरिक्त ट्रैक जैसी लंबी अवधि की संपत्ति बनाने पर किया गया खर्च पूंजीगत व्यय के अंतर्गत आता है। राजस्व व्यय आवर्ती खर्चों पर खर्च किया गया धन है, जैसे कि वेतन और पेंशन। 2023-24 के लिए बजटीय पूंजीगत व्यय 2.6 ट्रिलियन है, यह महामारी से पहले की तुलना में दोगुना है।

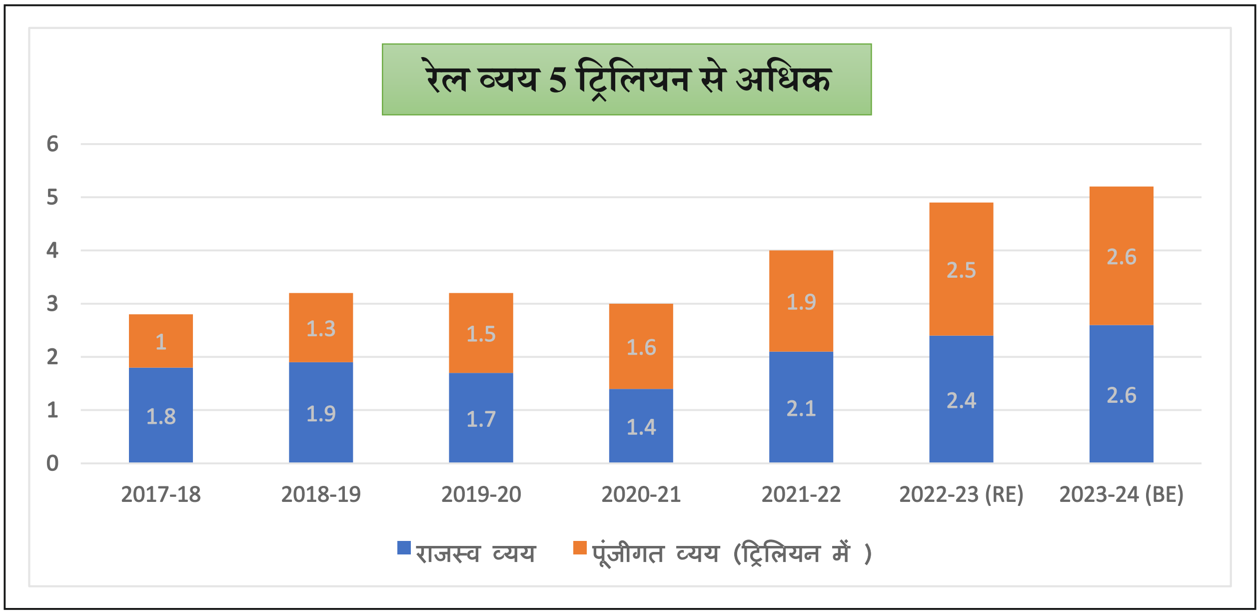

सुरक्षा बजट एक ट्रिलियन मार्क के करीब है। सुरक्षा बजट में रेलपथ नवीनीकरण, सिग्नलिंग और दूरसंचार कार्यों की हिस्सेदारी बढ़कर 22.3 प्रतिशत हो गई है। 2017-18 से सुरक्षा बजट 50 प्रतिशत से अधिक है और ट्रैक नवीनीकरण बजट लक्ष्यों से अधिक है। यह निम्नलिखित चार्ट से स्पष्ट है।

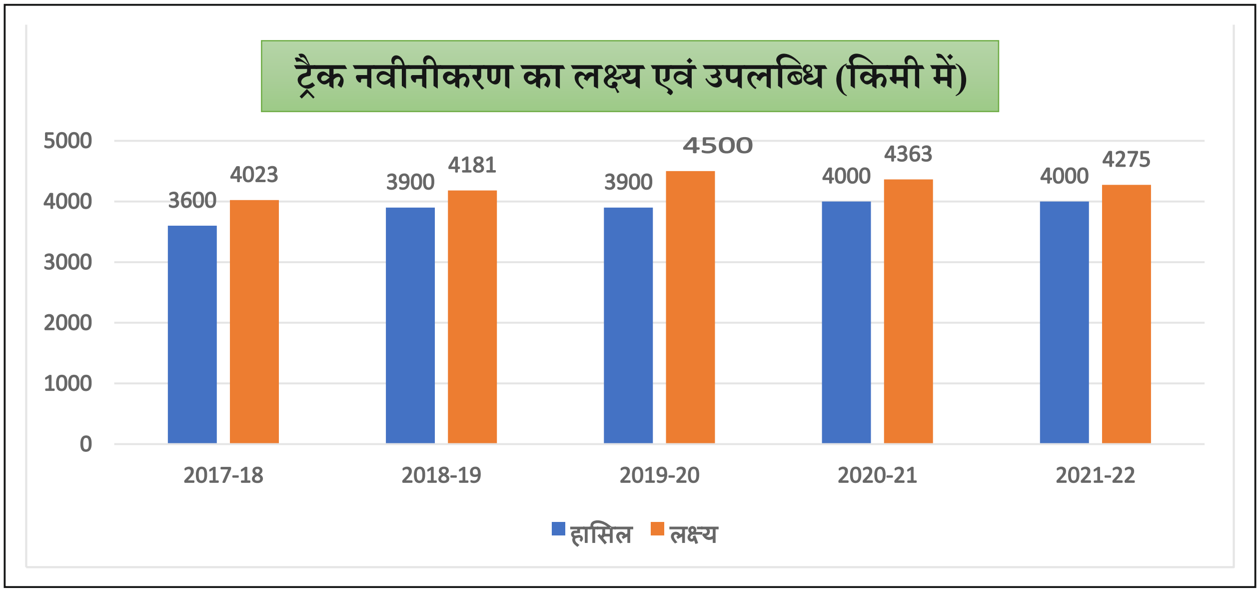

यद्यपि रेलवे के अनुसार, रेलवे दुर्घटना से मृत्यु में लगातार कमी आई है, परन्तु राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के डेटा से पता चलता है कि हर साल 20,000 से अधिक लोगों की मौत रेल दुर्घटना के कारण होती है।

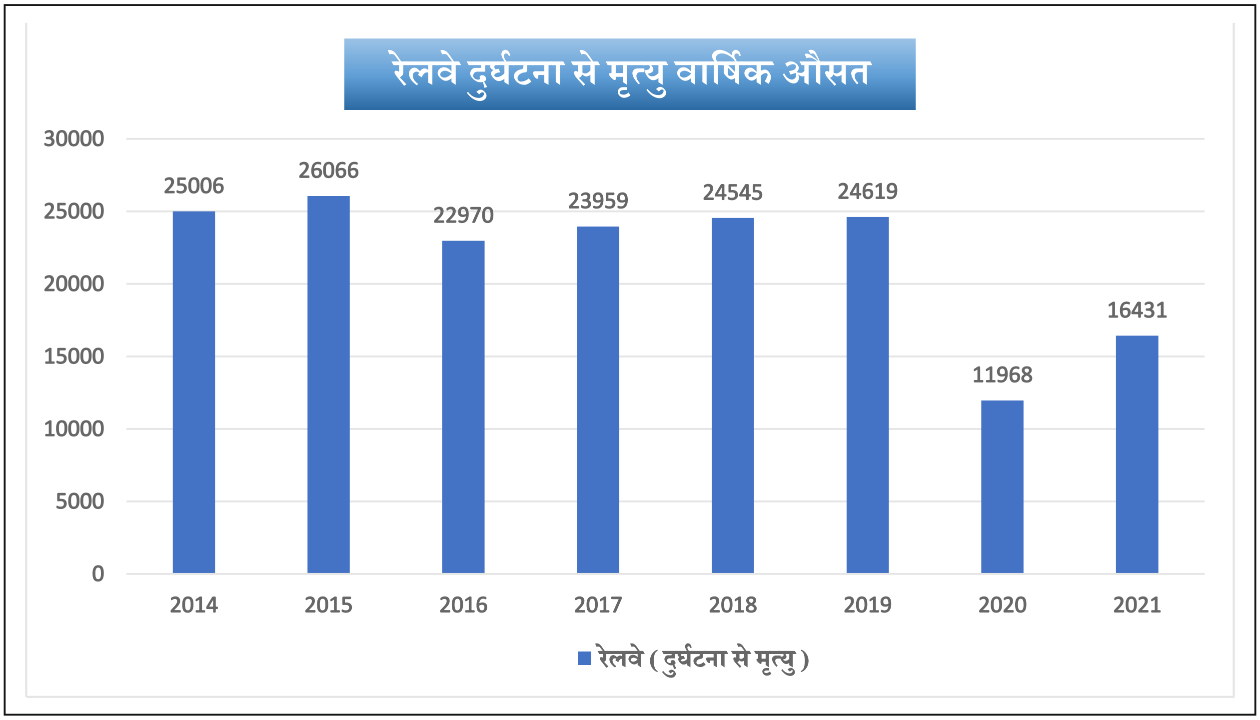

यात्रियों की संख्या के आधार पर भारतीय रेल दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है। चीन प्रथम स्थान पर है। अतः बढ़ती हुई यात्रियों की संख्या को मद्दे नजर रखते हुए अधिक लाइनों की आवश्यकता होगी।

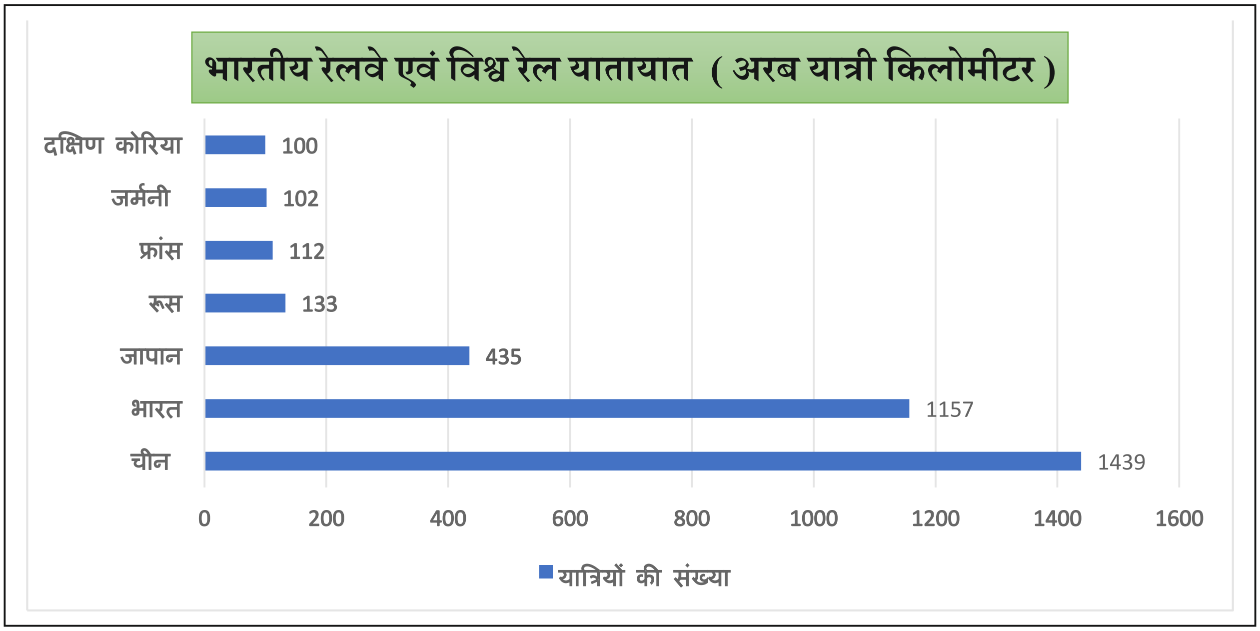

नोट: रेलवे द्वारा ले जाए गए यात्री, रेल द्वारा ले जाए गए यात्रियों की संख्या को यात्रा किए गए किलोमीटर से गुणा किया जाता है।

रूस (85000 किलोमीटर) ने भारत (2019 तक 67000 किलोमीटर) की तुलना में अधिक रेलवे लाइनें बिछाई हैं। वहीं चीन 100000 किलोमीटर के साथ सबसे अधिक रेल लाइन बिछाने वाला देश है।

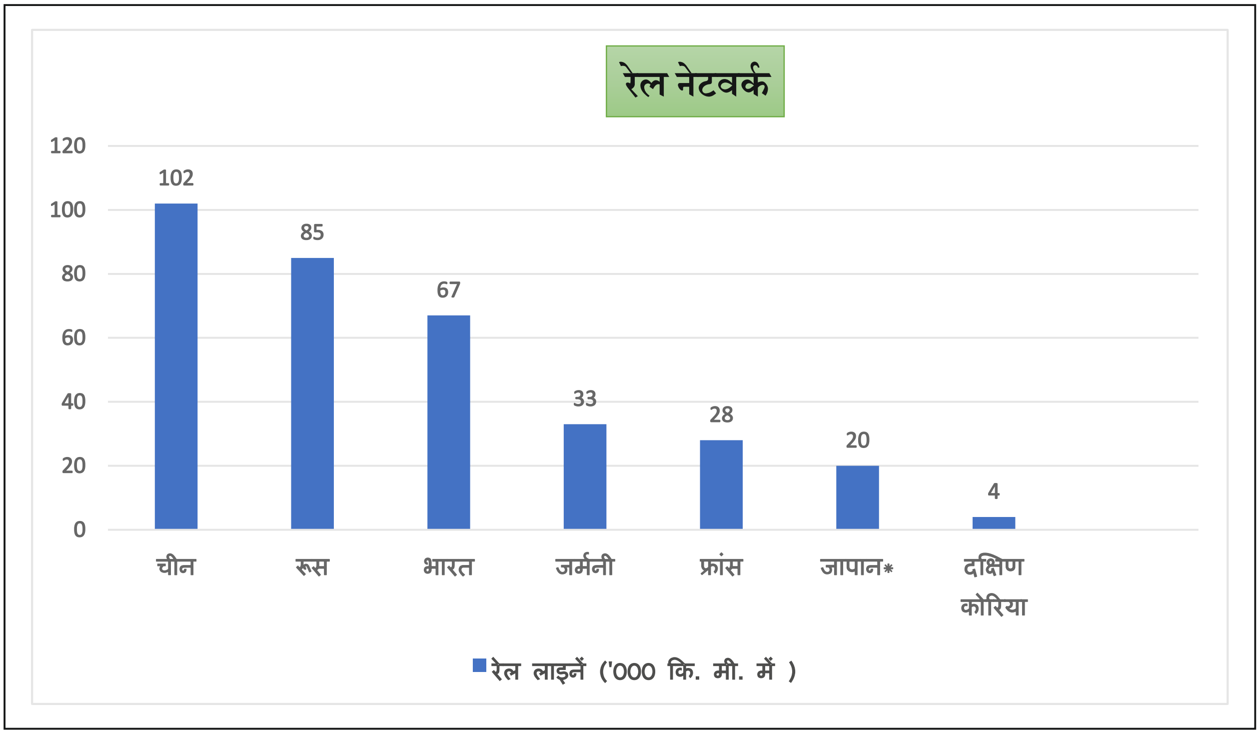

नोट: * जापान डेटा 2011 तक है, बाकी 2019 तक है।

★★★★★

धम्म-वचन : तिलक्खण

श्री पदमाकर कुशवाहा
निदेशक

"The Light of Asia" अर्थात् "एशिया के प्रकाश" कहे जाने वाले ऐतिहासिक महापुरुष तथागत गौतम बुद्ध की कर्म-स्थली होने का सौभाग्य भारतवर्ष को मिला है। "धम्म" तथागत बुद्ध की देशना को कहा जाता है जिसमें समय समय पर बुद्ध के अनुयायियों द्वारा उनकी समझ के आधार पर और अधिक बातों का समावेश होता चला गया। कालांतर में इसने आडंबरों और कर्म-कांडों से युक्त संगठित धर्म का रूप भी ले लिया। पर इसके बावजूद, बुद्ध की "धम्म-देशना" एक अत्यंत ही विलक्षण ज्ञान-चर्चा है।

धम्म में "तिलक्खण" अर्थात् "तीन लक्षण" का उल्लेख मिलता है। बुद्ध ने संसार में दृष्टिगत सभी वस्तुओं (चाहे वह मूर्त रूप में हों या अमूर्त रूप में) के तीन लक्षण बतायें हैं जो इस प्रकार हैं –

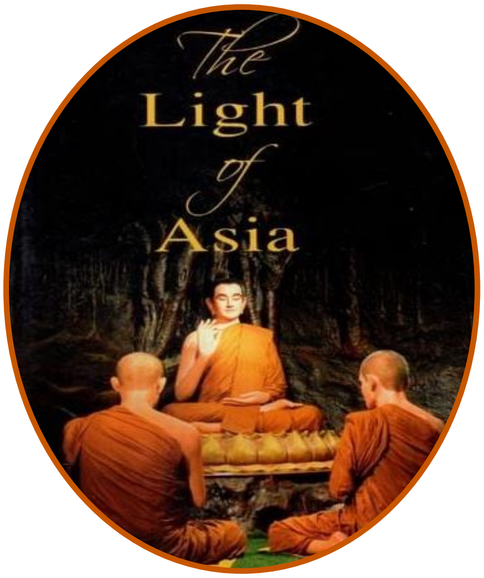

1. सब्बे संखारा अनिच्चा

सर्वप्रथम इन पाली शब्दों का अर्थ निकलना उचित होगा। "सब्बे" का मतलब "सभी" है और "संखार" शब्द के द्वारा मूर्त (tangible) या अमूर्त (intangible) वस्तुओं के उस प्रकार (kind) को परिभाषित किया गया है जो इस संसार में निर्मित होती हैं, या इस संसार में उद्घाटित होती हैं या जन्म लेती हैं (that come into existence in this world)। "अनिच्च" शब्द वैसे तो "अनित्य" का ही अर्थ देता है जिसका मतलब है "परिवर्तन-शीलता (impermanence)" तथापि बुद्ध-देशना/ धम्म में इसका एक निहितार्थ है- "जिसको अपनी संतुष्टि के अनुरूप बनाये न रखा जा सके (that cannot be maintained to our satisfaction)"।

तथागत बुद्ध ने कहा कि सभी मूर्त या अमूर्त वस्तुयें जो इस संसार में निर्मित होती हैं, वो अनित्य हैं अर्थात् वो सदैव एकरूप में नहीं रहती हैं। यह पढ़ने में एक साधारण बात लगती है लेकिन विचार करने पर इसका आयाम बहुत ही विस्तृत और आध्यात्मिक हो जाता है। सोचकर देखिए कि इस विश्व में ऐसी कौन सी वस्तु है जो निर्मित नहीं है? मुझे तो कोई ध्यान में नहीं आती। जीव, जंतु, वनस्पति, प्रकृति, धन-धान्य, स्वयं यह ब्रह्मांड- सभी मूर्त वस्तुएँ या तो जन्म लेती हैं या निर्मित होती हैं। उसी प्रकार अगर हम अमूर्त वस्तुएँ देखें, जैसे कि यश, स्मृति, प्रसिद्धि, पद, मित्रता, संबंध/ रिश्ते, ज्ञान, विचार, मत, सुखानुभूति, दुखानुभूति, इत्यादि तो ये सभी भी, कभी न कभी निर्मित होते हैं या प्रारंभ होते हैं।

और बुद्ध ने यह घोषित किया कि जो भी वस्तुतें निर्मित होती हैं वो समय के साथ साथ बदलती जाती हैं अर्थात्, नित्य नहीं होती हैं बल्कि अनित्य होती हैं।

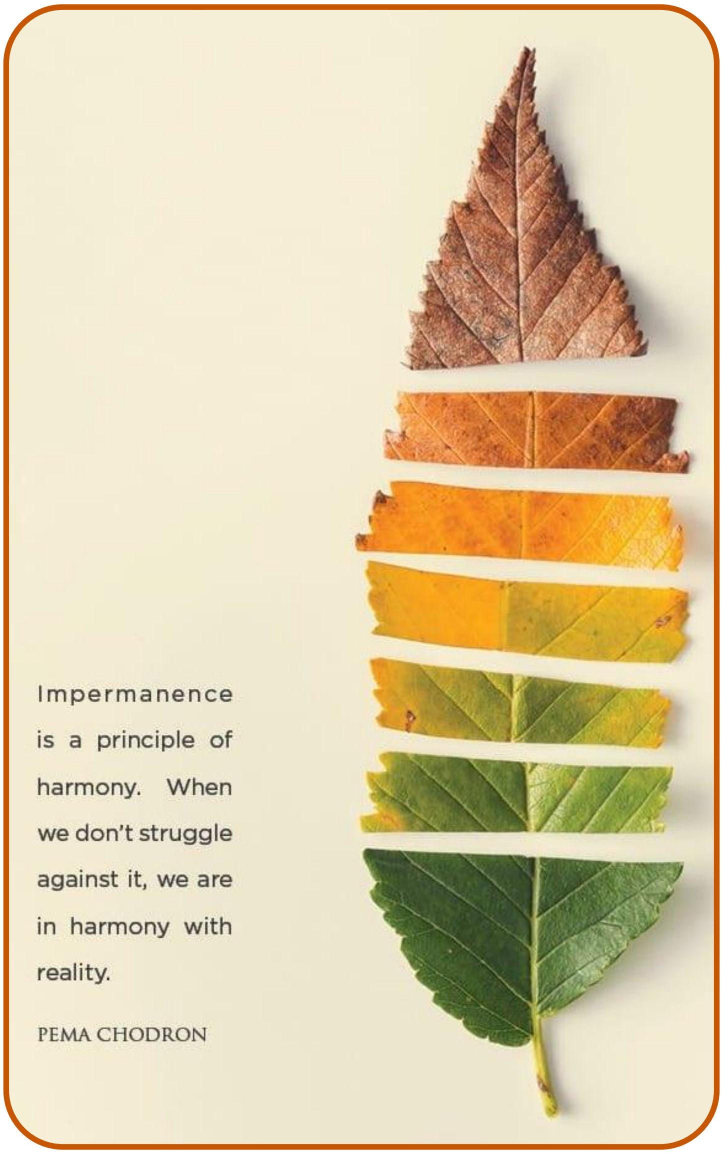

यह संभव है कि एक जीवन-काल में कोई वस्तु अपेक्षाकृत नित्य प्रतीत हो, परंतु तब "अनिच्च" शब्द का विशेष निहितार्थ कहता है कि अपेक्षाकृत नित्य प्रतीत होने वाली वस्तु भी हमारी तृष्णा/ इच्छा/संतुष्टि के अनुरूप नित्य बनी रहे यह संभव नहीं है। उदाहरण के तौर पर मान लीजिए किसी ने iPhone का नवीनतम संस्करण ख़रीदा हो तो उसकी ख़ुशी बहुत होती है। परंतु यह ख़ुशी iPhone के अगले नये संस्करण के आने तक ही सीमित रहती है जो कि साधारणतया एक साल की अवधि होती है। हालाँकि पुराने iPhone में कोई दृष्टिगत कमी नहीं होगी, परंतु सिर्फ़ इसका अब नवीनतम न रहना ही इसको "अनिच्च" बना देता है।

मैं इस धम्म-वचन को इस तरह भी समझता हूँ कि अनित्य वस्तुएँ न (केवल) समय के साथ साथ बदलती रहती हैं वरन् एक न एक दिन ये नष्ट भी हो जाती हैं। जीवन मिला है तो एक दिन ख़त्म भी होगा। पद/ प्रतिष्ठा मिली है तो एक दिन क्षीण/विनष्ट भी ज़रूर होगी। प्रेम/ मित्रता हुई है तो एक दिन ये क्षीण भी होगी। घनिष्ठता एक दिन तटस्थता में भी बदलेगी। यह एक वस्तु का शास्वत स्वभाव है- "वयधम्मा संखारा" अर्थात् सभी वस्तुएँ वयधर्मी/ उम्रदराज़/क्षयवान हैं।

2. सब्बे संखारा दुक्खा

वस्तुओं के प्रथम स्वभाव से ही जुड़ा हुआ है उनका दूसरा शास्वत स्वभाव। इसको आप वस्तुओं के प्रथम स्वभाव के जीव/ मानव पर होने वाले प्रभाव के रूप में भी समझ सकते हैं। बुद्ध कहते हैं कि वह सभी मूर्त या अमूर्त वस्तुयें जो इस संसार में निर्मित होती हैं, वो दुखदाई होती हैं, अर्थात् उनसे मानव को अंततः दुःख ही मिलता है।

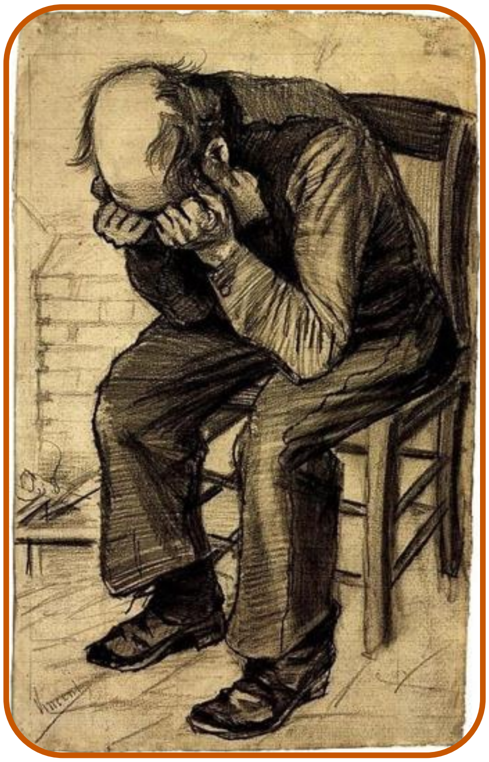

यह समझने में बहुत ही आसान है पर मनन करने में बहुत मुश्किल। क्योंकि जो अनित्य है उसके बदलने/ क्षीण होने पर व्यक्ति को दुःख होना स्वाभाविक है। व्यक्ति सुखदाई वस्तु को खोना नहीं चाहता और दुखदाई वस्तु को पाना नहीं चाहता। परंतु जो वस्तु अनित्य है, उसके बदलने / क्षीण होने पर या तो उसके सुखदायक स्तर में कमी होती है या वो दुखदाई बन जाती है, दोनों ही अवस्था में अंततः वह वस्तु दुःख का कारण बनती है।

प्रायः होता है कि एक धनाढ्य व्यक्ति किसी वस्तु को तब तक भोगता है जबतक वह सुखदाई रहती है और उसके बाद वह किसी और के हिस्से आकर किसी और को दुख दे सकती है। परंतु वह धनाढ्य व्यक्ति ऐसी सुखदाई वस्तु की लालसा में हमेशा लगा रहता है जिसके लिये उस वस्तु का उपलब्ध होना और व्यक्ति के पास समुचित धन होना आवश्यक है। साथ ही उस वस्तु के लिए अन्य प्रतियोगी धनाढ्य व्यक्ति भी होते हैं। फलस्वरूप, ये प्रतियोगिता और धन कमाने की लालसा ही दुख का कारण बनती है। कहने का तात्पर्य यह है कि अनित्य वस्तुओं से दुःख मिलना एक स्वाभाविक सत्य है।

3. सब्बे धम्मा अनत्ता

तथागत बुद्ध का यह तीसरा कथन बहुत ही गूढ़ है। विद्वानों ने मनन करते हुए इसके बहुत अर्थ निकाले हैं। शब्दार्थ हेतु, "धम्म" का शाब्दिक अर्थ संस्कृत में "धर्म" किया गया है परंतु बहुधा इसका प्रयोग स्वभाव (attribute), घटना (phenomenon), वस्तु (things/ beings), आदि को इंगित करने के लिए भी किया गया है। उसी प्रकार, "अनत्ता" का शाब्दिक अर्थ संस्कृत में "अनात्म" किया गया है जिसका प्रयोग "आत्मा का न होना (no soul)" के अतिरिक्त "आत्मबोध का न होना (no self)" के लिए भी किया गया है। अतएव "सब्बे धम्मा अनत्ता" का अर्थ हुआ "कोई भी स्वभाव/ घटना/ वस्तु आत्म-विहीन होती है"।

मैं इस कथन को तीन स्तरों पर समझाना चाहता हूँ- सांसारिक/ सामाजिक स्तर पर, वैयक्तिक/ मनोवैज्ञानिक स्तर पर और धार्मिक/ आध्यात्मिक स्तर पर। इसके लिए मैं पहले आत्मबोध (self) के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। Self एक निरंतरता में बहती हुई अवधारणा है। आपका अपना मन निश्चित रूप से Myself के रूप में ही पहचाना जाएगा (एक से दस के पैमाने पर पूरा दस अंक) जबकि मंगल ग्रह पर पड़ा हुआ एक पत्थर Myself से किसी भी रूप में जुड़ा हुआ नहीं माना जाएगा अर्थात् जीरो अंक।

आपके शरीर के बाह्य अंगों को इस पैमाने पर नौ से दस के बीच अंक दिया जा सकता है और आपका करीबी परिवार- पति/पत्नी, पुत्र-पुत्री, माता-पिता को आप आठ से नौ के बीच अंक दे सकते हैं। कहने का तत्पर्य है की Myself ऐसे ही शरीर से बाहर जाते हुए, परिवार/ वृहद्-परिवार, समुदाय, प्रदेश, देश, मानवता-स्तर, जीव-निर्जीव स्तर तक जाते जाते शून्य हो जाता है। ऐसे ही आप दूसरे के Self को भी देखते हैं और उसे Yourself से परिभाषित करते हैं। अब मैं तीसरे धम्म-वचन अर्थात् "कोई भी स्वभाव/ घटना/ वस्तु आत्म-विहीन होती है" के बारे में अपनी समझ को आपके सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ।

I. सांसारिक / सामाजिक स्तर: सांसारिक स्तर से मेरा तात्पर्य है, शरीर की परिधि से बाहर का संसार। इस संसार में जीव-निर्जीव वस्तुएँ हैं और हमारे अपने लगाव/ मोह के अनुसार हम कुछ को मेरा कहते हैं और कुछ को तुम्हारा और कुछ के बारे में कोई राय/ मत नहीं रखते। इस "मेरा" की तीव्रता Myself के पैमाने के अनुसार होती है। यदि कोई वस्तु मेरे लिए बहुत अधिक महत्व रखती है परंतु किसी दूसरे के लिए शून्य महत्व रखती है- जैसे कि मेरे स्वर्गवासी दादाजी की फोटो, तो इसका यह एक अकाट्य प्रमाण है कि उस फोटो में कोई Self नहीं है वरना वो सबको एक समान प्रिय/ अप्रिय होती। इसका मतलब है की प्रियता/ अप्रियता व्यक्ति की अपनी सोच है। बुद्ध-धम्म का "शून्यवाद" का सिद्धांत इसी अवधारणा पर आधारित है।

मेरे दादाजी की फोटो मेरे लिये पूजनीय/ सम्माननीय है पर अगर गलती से ये उड़कर कहीं दूर जाकर सड़क पर गिर जाए और अगले दिन कोई सफ़ाईकर्मी उसे झाड़ू से साफ़ करता हुआ मिले तो मेरा उसपर क्रोधित होना नितांत ही अनुचित होगा क्योंकि उस सफ़ाईकर्मी के लिए उस फोटो की कोई अहमियत नहीं है। पूरे विश्व में सभी लड़ाई-झगड़ों की जड़ है इस "No -Self" को न समझ पाना, "अपनी वस्तु" को ही वरीयता देना और दूसरे के प्रिय को न समझ पाना।

इसी बात को दूसरे रूप में मैं ऐसे भी कह सकता हूँ कि निर्जीव वस्तुओं में हम सजीव को आरोपित कर देते हैं और प्रतीकों को ही अस्तित्व मानकर उनके नाम पर किसी भी स्तर का वाद-विवाद-हिंसा करने पर उतारू हो जाते हैं। प्रतीक, एक प्रतीक मात्र होता है, जिसे हम स्वयं बनाते हैं बिना उस अस्तित्व की सहमति के जिसका वह प्रतीक होता है। वह जिसका प्रतीक होता है उस अस्तित्व का न तो प्रतिनिधित्व करता है,

न ही उस तक उस प्रतीक की पहुँच होती है। आप मिस्टर डॉनल्ड ट्रम्प की फोटो को सम्मान दे सकते हैं, हवन कर सकते हैं, भोग/ प्रसाद अर्पित कर सकते हैं, पर वह फोटो न तो इस सबकी सूचना मिस्टर ट्रम्प को देगी, न ही भोग का स्वाद उन तक पहुँचायेगी, न ही मिस्टर ट्रम्प फोटो के माध्यम से कोई प्रतिक्रिया देंगें। अतः यदि आप इस तरह मिस्टर ट्रम्प के लिये हवन करने का विरोध करने वाले को प्रताड़ित करते हैं तो यह मिस्टर ट्रम्प की सहमति से नहीं होगा बल्कि यह आप अपनी अहं की तुष्टि के लिए या अपनी Myself की धारणा की पुष्टि/ रक्षा के लिए ऐसा करेंगें। फोटो सिर्फ़ एक निर्जीव फोटो है।

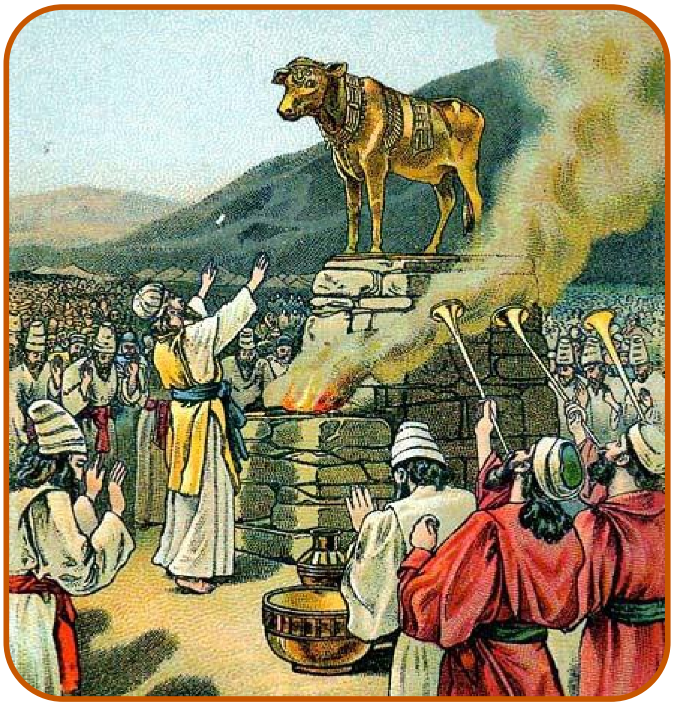

तो आप किसी और के नाम पर अपनी अहं की पुष्टि के लिए लड़ना छोड़ें, यही उत्तम है और इसके लिये आपको सभी वस्तुओं के No -Self के स्वभाव/ लक्षण को हमेशा ध्यान में रखना होगा।

II. वैयक्तिक/ मनोवैज्ञानिक स्तर : वैयक्तिक स्तर से मेरा तत्पर्य है, शरीर की परिधि के अंदर का संसार अर्थात् हमारी सोच, मनोदशा, भावनाएँ, विचार, संकल्प, आकांक्षा, अपेक्षा, आदि। हम सामान्यतया यह मानते हैं कि हमारा एक Self है जिसे हम Myself कहते हैं- कोई एक स्वतंत्र कर्ता जो सभी भावनाओं, स्मृतियों, इंद्रियों आदि से प्राप्त सूचनाओं को एकत्रित कर स्वतंत्र रूप से उनका विश्लेषण करता है और फिर एक उपयुक्त निर्णय पर पहुँचता है।

परन्तु वस्तुतः ऐसा होता नहीं है। धम्म-कथन यहाँ भी यही कहता है कि ऐसा कोई Self होता नहीं है। व्यक्ति एक "लर्निंग मशीन" होता है जो सीखता जाता है और इस प्रक्रिया में प्राप्त सूचनाओं को संकलित करता जाता है। इसका कभी भी लिया गया कोई भी निर्णय, इंद्रियों से प्राप्त तत्कालीन सूचनाओं पर भूतकाल में सीखे गये अनुभवों या किसी और व्यक्ति के दिये गये सलाह (जो कि उस दूसरे व्यक्ति के भूतकाल में सीखे गये अनुभवों पर आधारित होता है), की प्रतिक्रिया होती है।

अर्थात् मनुष्य एक अत्यधिक विकसित स्वयं-क्रमादेशित (self -programmed) यंत्र है जिसे क्रमिक-विकास (Evolution) ने लाखों सालों में तराशा है।

I. धार्मिक/ आध्यात्मिक स्तर : धार्मिक / आध्यात्मिक स्तर पर आत्मा-परमात्मा की अवधारणा है जिसे तथागत बुद्ध स्वीकार नहीं करते। "आत्मा" को नित्य अर्थात् एक अजर, अमर, अविनाशी, निर्लेप और शुद्ध तत्व माना गया है जो पुनर्जन्म का कारण बनती है। आत्मा ही जीव का शरीर धारण करती है और फिर शरीर त्याग कर मुक्त हो जाती है तथा पिछले शरीर के कर्मों के आधार पर नया शरीर धारण करती है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि आत्मा निर्लेप अर्थात् ऐसा शुद्ध तत्व है जो किसी भी चीज़ से प्रभावित/ अपवित्र नहीं होती, तो पिछले शरीर के कर्मबंध को बिना अप्रभावित हुए कैसे आगे ले जाती है? और यदि कर्मबंध को आगे ले जाने के लिए प्रभावित होती है तो आत्मा अनित्य/ परिवर्तनशील होनी चाहिए जो कि आत्मा की परिभाषा के विपरीत है। अतः ऐसी कोई आत्मा नहीं होती है।

यह कहा जाता है कि, परमात्मा के विषय में तथागत बुद्ध ने मौन धारण कर लिया था और इस विषय पर कुछ नहीं कहा। तथापि, बुद्ध के दर्शन के आलोक में मेरा परमात्मा के विषय में ऐसा सोचना है कि यदि कोई परम सत्ता परमात्मा है तो वह दो ही रूपों में हो सकता है-

i. अदृश्य, अव्यक्त, तटस्थ सत्ता : ऐसी सत्ता जिसने संसार बनाया, उसके नियम बनाए और फिर इस विश्व को अपने बनाये नियमों के अधीन कर अंतर्ध्यान हो गया। ऐसी सत्ता को न तो व्यक्त या अव्यक्त रूप से अनुभव किया जा सकता है, न ही ये सत्ता इस संसार को अपने नियमों के परे जाकर प्रभावित करती है।

विज्ञान के द्वारा हम नियमों पर आधारित विश्व को समझते और जानते हैं। विज्ञान किसी परम सत्ता को नहीं मानता बल्कि सिर्फ़ नियमों को मानता है। अगर कोई ऐसी सत्ता है भी, पर अब नियमों के परे जाकर कुछ नहीं करती तो; ऐसी सत्ता के होने या न होने से विज्ञान या विश्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यही शून्यवाद है। फिर ऐसी किसी सत्ता को मानकर क्या ही होना है! आप नियमानुसार चलिए, सब कुछ नियमानुसार होगा।

ii. **सर्वव्याप्त, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान सत्ता :** ऐसी सत्ता जिसने न सिर्फ़ संसार बनाया और उसके नियम बनाए बल्कि आज भी इस विश्व को चला रहा है। ऐसी सत्ता को उसके परम भक्त व्यक्त या अव्यक्त किसी भी रूप में अनुभव कर सकते हैं। ये सत्ता इस संसार को अपने नियमों के परे जाकर प्रभावित करती है और अपने भक्तों को चमत्कार दिखाती है।

ऐसी सत्ता की परिकल्पना में समस्या ये है कि दुनिया के हर कोने में एक ऐसी सत्ता की मान्यता दिख जाती है। और चूँकि सिर्फ़ एक ही सत्ता परम-सत्ता हो सकती है, तो इसका मतलब हुआ कि बाक़ी सभी झूठ हैं। और किसी भी सत्ता, जो 'परम' होने का दावा करती है, उसकी अपनी सर्वशक्ति से इसे साबित न करने की अक्षमता के कारण ही आज तक इन सब के दावे लंबित दिखते हैं।

ये भी एक विरोधाभासी बात है कि सभी परम-सत्ता होने का दावा करने वाली सर्व-शक्तिमान सत्ताओं ने अपने भक्तों को आपस में लड़कर ये तय करने का निर्देश दे रखा परंतु सर्व-शक्तिमान होते हुए भी ख़ुद आपस में लड़ने से बच रहे हैं। साथ ही यह एक बचकानी परिकल्पना लगती है कि ऐसी परम-सत्ता ने यह विश्व सिर्फ़ इसलिए बनाया कि लोग उसकी भक्ति कर सकें। दो लोग अगर सभी पैरामीटर पर एक समान हैं तो ऐसी परम-सत्ता सिर्फ़ उसको सफल बनाएगी जो उसका भक्त होगा या भक्ति में उसके नंबर दूसरे वाले से ज़्यादा होंगे।

इस तरह तर्क करते हुए हम पाते हैं कि No -Self, धार्मिक/ आध्यात्मिक स्तर पर आत्मा-परमात्मा के विमर्श से मुक्त होकर, अपनी स्वयं की क्षमता पर भरोसा रखने की शिक्षा देता है।

इससे हम और आप परम-सत्ता से लाभान्वित होने के मोह-पाश से मुक्त होकर न सिर्फ़ मानसिक शांति पाते हैं बल्कि भौतिक वस्तुओं की भी कर्म-कांडों में व्यर्थ होने से बचत करते हैं।

"तिलक्खण" पर अपने इस निबंध/ व्याख्यान को मैं यहीं समाप्त करना चाहूँगा, यद्यपि इस पर अभी और बहुत कुछ लिखा एवं कहा जा सकता है। अंत में मैं बस तथागत बुद्ध के इस वचन को दुहराना चाहूँगा- "इहि पस्सिको" अर्थात् "आओ और देखो **(come and see)"**। इन धम्म-वचनों को बस इसलिए मत मानो कि किसी महापुरुष ने कहे हैं या किसी धर्म का सिद्धांत है, बल्कि इसको ख़ुद आज़माओ और फिर स्वयं निष्कर्ष निकालो।

आपको कभी भी कोई दुःख हो, चिंता हो, तनाव हो तो एक जगह थिर होकर उस कारण को ढूँढिये जिसकी वजह से वह दुःख/ चिंता/ तनाव है और फिर उस "कारण" का असली स्वभाव ऊपर वर्णित "तिलक्खण" के आधार पर जानिए। उसके स्वभाव का "सम्यक् ज्ञान" होते ही आपकी मन की शांति पुनः लौट आएगी।

इहि पस्सिको !!

★★★★★

चित्रकला

कृति कुशवाहा

सुपुत्री पदमाकर कुशवाहा, निदेशक

‘महासमर’ पुस्तक की समीक्षा

श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

हिंदी साहित्य की जो पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं, उनमे डॉ नरेंद्र कोहली जी द्वारा लिखी गई रचना “महासमर” मुझे विशेष रूप से पसंद है। इस रचना को उन्होंने आठ भागों में लिखा है। इस पुस्तक में महाभारत की कहानी को बड़े ही सुन्दर और तार्किक तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जो हमें कई अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर देता है। भारतीय चिंतन व दर्शन को मूर्तरूप देने वाली इस रचना को पढ़कर पाठकों के समक्ष महाभारत काल सजीव हो उठता है। हर एक खंड अपने आप में विशेष है। मै अपने सीमित ज्ञान और समझ से प्रथम दो खण्डों के बारे में लिखने का प्रयास करूँगा।

प्रथम खंड बंधन

इस खंड की शुरुआत होती है, हस्तिनापुर के सम्राट शांतनु की खिन्नता प्रकट करने से। सत्यवती के पिता दासराज द्वारा अपनी सुपुत्री की भावी संतानों के लिए राज्याधिकार मांगे जाने से उद्विग्न शांतनु, नगर द्वार पर उनकी प्रतीक्षारत अपने पुत्र देवव्रत से बेखबर आगे बढ़ जाते हैं। यहीं से भावी घटनाओं की पृष्ठभूमि के साथ-साथ महासमर के इस पहले खंड के केंद्र में देवव्रत की चिंतन-प्रक्रिया भी हमारे समक्ष प्रत्यक्ष होने लगती है। अपने माता-पिता के प्रेम से वंचित, बाल्यावस्था से ही युवराज देवव्रत आश्रमों के कठोर अनुशासन में पले-बढ़े थे। पच्चीस वर्ष की अल्पायु में ही धर्म में उनकी कितनी प्रगाढ़ आस्था थी, यह उनके चिंतन से स्पष्ट हो जाता है। लेकिन केवल सामाजिक विधिविधान व रीति-रिवाजों के दृष्टिकोण से किया गया धर्म-चिंतन भी व्यक्ति, परिवार एवं समाज के लिए कितना कष्टप्रद एवं पीड़ादायी हो सकता है, इसका उल्लेख देवव्रत के जीवन-चित्रण के माध्यम से किया गया है। दासराज के सम्मुख की गई अपनी भीषण प्रतिज्ञाओं के कारण भीष्म की संज्ञा प्राप्त करते हैं – इसी में देवव्रत की महानता भी है और सीधापन भी।

महासमर के इस पहले खंड में काम, क्षोभ, लोभ, भोग, अहंकार और भय को सम्राट शांतनु, दासराज, महारानी सत्यवती, राजकुमार चित्रांगद व विचित्रवीर्य एवं काशी की तीनों राजकन्याओं (अंबा, अंबिका और अंबालिका) के जीवन-चित्रण के माध्यम से एक मूर्त रूप-सा दे दिया गया है। परन्तु यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इस विस्तृत घटनाक्रम के मध्य में केवल भीष्म और उनकी प्रतिज्ञाएं ही हैं। यह अद्भुत ही है कि कुरुवंश के प्रत्येक सदस्य के चरित्र व चिंतन पर प्रकाश डालने के बावजूद भीष्म का व्यक्तित्व गगनमंडल में जगमगाते किसी विशाल तारे की भांति उभर कर आता है। जन्मांध धृतराष्ट्र की धूर्तता, रुग्ण पाण्डु की महत्त्वाकांक्षाओं व दासीपुत्र महात्मा विदुर की नीति का भी वर्णन है। 70 अध्यायों की इस रचना में पाण्डवों एवं धृतराष्ट्रों के जन्म की कथा से लेकर अल्पव्यस्क पाण्डवों के हस्तिनापुर में आगमन व सत्यवती सहित अंबिका और अंबालिका का कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास के साथ प्रस्थान का उल्लेख भी किया गया है।

इस उपन्यास में प्रस्तुत राजनीति, धर्म व समाज से संबंधित भीष्म के मन के भीतर चलते सतत द्वंद्व में हमें आधुनिक काल के अपने द्वंद्व की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है। महाभारत को यथार्थवाद की कसौटी पर तोलती 522 पृष्ठों वाली यह रचना वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता को भी रेखांकित करती है। प्रत्येक छोटी-बड़ी घटना से लेकर प्रत्येक पात्र की चिंतन-प्रक्रिया का सविस्तार उल्लेख किया गया है। संस्कृतनिष्ठ भाषा में होने के बावजूद कोहली जी की शैली सुबोध एवं अत्यंत सरल है। भारतीय इतिहास, आध्यात्मिकता व दर्शन में रूचि रखने वाले सुधी पाठकों को इस रचना को अवश्य पढ़ना चाहिए।

द्वितीय खंड अधिकार

महासमर श्रृंखला की दूसरी कड़ी है अधिकार । जहाँ बंधन नामक इस श्रृंखला के पहले खण्ड के केंद्र-बिन्दु देवव्रत भीष्म थे, वहीँ इस पुस्तक की रचना लेखक ने पाण्डवों व विशेषतः धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मपरायणता और अनृशंसता को केंद्र में रख कर की है।

कथा का आरंभ गांधारी व धृतराष्ट्रपुत्रों की दासियों द्वारा कुंती और पांडवों की अवमानना से किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हस्तिनापुर के राज्य व व्यवस्था पर अपना आधिपत्य जमाए बैठा धृतराष्ट्र व उसका परिवार किसी भी प्रकार सिंहासन पर पाण्डु-पुत्रों के न्यायोचित अधिकार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। भीम को विष देकर उसका वध करने के दुर्योधन व उसके मित्रों के प्रयत्न से पाण्डवों के विरुद्ध उनके षड्यंत्रों का आरंभ भी इसी खण्ड से हो जाता है।

महासमर के इस भाग में ही द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, द्रुपद व पांचालों का प्रवेश भी हो जाता है। भीष्म द्वारा द्रोणाचार्य को कुरुओं के गुरु के रूप में नियुक्त किए जाने के पश्चात् कुरु राजकुमारों के प्रशिक्षण की अवधि के दौरान घटित प्रसंगों – जैसे कि द्रोण द्वारा गुरु-दक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा मांगे जाने, अथवा अपनी अनन्य एकाग्रता का परिचय देते हुए अर्जुन द्वारा लकड़ी के पक्षी की आँख का लक्ष्यवेध करने – का भी उपयुक्त वर्णन किया गया है। रंगभूमि में कुन्ती को कर्ण से अपने संबंध का बोध हो जाने वाली घटना के तर्कसंगत एवं सजीव चित्रण को इस रचना का सबसे अविस्मरणीय प्रसंग कहना शायद गलत नहीं होगा। महाभारत के महानायक कृष्ण का प्रवेश भी इसी खण्ड में हो जाता है। पाण्डवों – और विशेषतः अर्जुन – के साथ कृष्ण की घनिष्ठता, धर्म-चर्चा व सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में एक अखंड धर्मराज्य की संस्थापना करने की उनकी परिकल्पना का आरंभ भी यहीं से होता है। इस रचना में गति पकड़ता घटनाक्रम, बहुत ही सटीक और तर्कसंगत ढंग से भावी घटनाओं की पृष्ठभूमि तैयार करता है। 21 अध्यायों वाली इस रचना का प्रत्येक पृष्ठ पाठकों को महाभारत के अपने ज्ञान का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए बाध्य कर देगा।

लेखक ने अत्यंत दक्षतापूर्वक भीष्म को पृष्ठिका में धकेल कर युधिष्ठिर और विदुर जैसे धर्म-विचारकों को इस खण्ड के नायकों के रूप में प्रस्तुत किया है। 400 पृष्ठों के साथ अधिकार किसी ग्रंथ जैसा न लग कर, किसी उपन्यास जैसा ही लगता है। महासमर की पहली ही कड़ी के समान, इस भाग में भी संस्कृतनिष्ठ परन्तु सरल हिन्दी का उपयोग किया गया है। अधिकारों की व्याख्या करने वाले इस खण्ड में पाठकों को अपने वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष की प्रतिध्वनियाँ सुनाई देंगी। अधिकारों के वास्तविक अर्थ एवं महत्त्व को समझने के इच्छुक और पाण्डवों के आरंभिक संघर्ष के विषय में अधिक जानने के लिए व्यग्र पाठकों को इस रचना को अवश्य पढ़ना चाहिए।

★★★★★

हाँ ये पुरुष है।

श्री निलेश जाधव
(कल्याण सहायक)

हाँ ये पुरुष हैं, ।। धृ।।
माना के इनके आखों में नमी नही होती
पर इनके दिल मे भी जज़्बातों की कमी नही होती
हाँ ये पुरुष है ।।1।।

प्यार जताने का इनका अलग ही तरीका होता है।
कभी डाँटते हैं, कभी गुस्सा करते हैं
कभी हुकुम चलाते है, कभी -कभी रोब भी जमाते हैं
सीधे-सीधे कोई बात ये बताते नहीं
फ़िक्र हमारी सबसे जादा करते हैं
पर प्यार से कभी जताते नही
हाँ ये पुरुष है ।।2।।

दफ्तर और घर को, लंबी उम्र तक बैलेंस करते है।
हालातों से ये, भी लडते है।
कभी माँ को नही कह पाते, कभी बीबी को कहना नही चाहते
और नाराज़गी दोनो की सहते है
वैसे तो ये निडर है, पर रिश्तों को खोने के डर से अक्सर ये डरते है।
हाँ ये पुरुष है।

बातो में शक्ति, काधों में मजबूती
और सीना फौलादी रखते हैं।
पर आंगन से जब उठती है डोली
तो सब से ज्यादा यही रोते हैं।
हाँ ये पुरुष हैं।

बच्चो से लेके बुजुर्ग तक की
जिम्मेदारी ये उठाते है।
अपनी ख्वाहिशों को कफन चढ़ा के
अपनी पूरी जवानी जलाते है।
हाँ ये पुरुष है।

जब भी कोई मुसीबत आती है।
परिवार से पहले इनसे टकराती है
अरे कुछ नही होगा, चिंता छोडो
और सो जाओ मै हूँना
कहके सबको सुलाते
औऱ वही चिंता में पूरी रात खुद जगते है।
हाँ ये पुरुष है।

★★★★★

बात कड़वी है, असहनीय है।

श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

नारी की स्थिति आज भी दयनीय है
क्योंकि आपस में ही इनकी अनबन है
इस समाज में नारी ही नारी की दुश्मन है।
सास बहू ननद भाभी, हर रिश्ते में छिपा कपट है।
पीठ पीछे एक दूसरे की निंदा और रपट है।
शिक्षा रोजगार की हो बात या हो दहेज
रखती नहीं बेटियों को सहेज ।
इनका मिलता नहीं एक दूसरे से मन है,
क्या यह झूठ है, नारी ही नारी की दुश्मन है।

चहारदिवारी को लांघा, हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई।
पर वहां भी सुरक्षित कहां हो पाई।
भेड़ की खाल में भेड़िया का जमावड़ा है,
पर क्या करें नारियों का यहां भी अखाड़ा है।
एकजुट होने के बजाय एक-दूसरे की खिल्ली उड़ाती हैं
हाथ थामना तो दूर पीड़ित पर ही दोष लगाती हैं।
तभी तो मन में डर है और आँखे नम है
सच है ना कि नारी ही नारी की दुश्मन है।

तुम ही विद्या, तुम ही लक्ष्मी, तुम ही शक्ति का रूप हो
क्या बिगाड़ेगा कोई अगर तुम एकजुट हो,
पहचानो अपनी शक्ति और एक हो जाओ,
सबल बनो और हर भय को मन से भगाओ
हर नारी का साथ दोगे करना यह प्रण है,
मिथ्या कर दो यह बात कि नारी ही नारी की दुश्मन है।

★★★★★

मेरा गुस्सा

सुश्री मधु सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

सातवें आसमां सा
मेरा गुस्सा।
आता नही सबपे
मेरा गुस्सा।।

नाक पे रखा यूँ
मेरा गुस्सा।
सताता नहीं सभी को
मेरा गुस्सा।।

उड़ी पतंग सा
मेरा गुस्सा।
रास आता नहीं सभी को
मेरा गुस्सा।।

गर्म कढ़ाई के तेल सा
मेरा गुस्सा।
अपनो को पराया करता
मेरा गुस्सा।।

सिंह की दहाड़ सा
मेरा गुस्सा।
बेटी को भी नही भाता
मेरा गुस्सा।।

चाकू की धार सा
मेरा गुस्सा।
सिर्फ अपनो को रुलाता
मेरा गुस्सा।।

पता नहीं कहां से आता
मेरा गुस्सा
पलभर में छू हों जाता
मेरा गुस्सा।।

मेरे प्यारो पर ही है ये
मेरा गुस्सा।
नही है सबके लिए ये
मेरा गुस्सा।।

छोड़ दूंगी अब मैं ये
मेरा गुस्सा।
नहीं है ये किसी काम का
मेरा गुस्सा।।

★★★★★

कार्यालय में आयोजित
हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

जीवन का उद्देश्य या लक्ष्य

श्री मुनिनाथ यादव
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

• तुलसीदास जी कहते हैं 'बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा॥ यानी निस्संदेह मानव ही विधाता की सुंदर कृति है। यह मानव सब प्राणियों में मधु के समान प्रिय है। शायद इसीलिए देवों ने मानव को अपना निवास स्थान बना लिया " नरो वै देवानाम् ग्राम" (मानव देवों का धाम यानी निवास है।) यह संसार आश्चर्यजनक वस्तुओं से भरा पड़ा है। किन्तु मनुष्य सेवा कोई आश्चर्य नहीं है। श्री जैनेन्द्र कुमारजी के शब्दों में "मानव कर्म, आदर्श और संभव का मेल है। एक तरह से वह समझौता है"। असल में मनुष्य स्वयं में एक संपूर्ण ग्रंथ है।श्री रवीन्द्रनाथजी के शब्दों में " जल में मीन मौन है। पृथ्वी पर पशु कोलाहल कर रहे हैं और आकाश में चिड़िया गा रही है। परन्तु मनुष्य समुद्र का मौन है, पृथ्वी का कोलाहल है और आकाश का संगीत है।" इस सृष्टि में मनुष्य की तुलना में और कोई वस्तु नहीं है। श्री सुमित्रासन्दन पंत ठीक ही कहते हैं -

- सुंदर है विहग, सुमन सुंदर मानव! तुम सबसे सुंदरतम, निर्मित सब की तिल-सुषमा से, तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम॥

जीवन क्या है ? :-जीवन के बारे में लेखकों और कवियों के विचार देखें-"खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदा आगे बढ़ते रहने की लगन का।" - प्रेमचंद।

"जीवन अनंत है। जीवन सौभाग्य है, जीवन अलभ्य है। "- जयशंकर प्रसाद।

"यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो, समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो। कुछ तो उपयुक्त करो तन को " - मैथिली शरण गुप्त। मतलब मनुष्य को जीवन में ऐसा काम करना चाहिए जिससे उसके मरने के बाद भी वह याद किया जाय।

लक्ष्य क्या है ? :- मानव तन का पूरा लाभ उठाने के लिए, मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए मनुष्य के जीवन का कोई लक्ष्य होना चाहिए। और लक्ष्य का मतलब है वह वस्तु, जिस पर ध्यान रखकर कोई बात कही जाय या कोई काम किया जाय। मनुष्य को सोच लेना चाहिए कि वह अपने जीवन में क्या करना चाहता है, क्या बनना चाहता है ? और इस प्रकार अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर, भगवान के दिये शारीरिक और मानसिक बल को, उस लक्ष्य की पूर्ति में लगा देना चाहिए। क्योंकि बिना लक्ष्य का जीवन, जंगल में भटकने के समान है।

लक्ष्य के प्रकार : सामान्य तौर से कोई डॉक्टर बनना चाहता है तो कोई अध्यापक बनना चाहता है, कोई वकील तो कोई व्यापारी और कोई नेता। इस तरह वे कोई एक पेशा चुन लेते हैं और अपने को धन्य समझते हैं। पर इतना मात्र तो जीवन का लक्ष्य नहीं होता। असलियत तो यह है कि आज कोई भी जीवन निर्माण का संकल्प, दृढ़ विचार नहीं लेता। सब लोग संयोग पर निर्भर रहते हैं। जो हो जाय, ठीक है। पर यह तो मनुष्य का सामान्य लक्ष्य है। इसके साथ ही जीवन का एक विशिष्ट लक्ष्य भी होता है। हमें जो बनना है उसका निश्चय पहले हो।

लक्ष्य तय करने का समय जानना चाहिए और उसके अनुकूल हमारे सारे प्रयत्न होने चाहिए। लक्ष्य निश्चित करने का सही समय है विद्यार्थी काल। अगर कोई सोचेंगे कि पढ़ने के बाद करेंगे तो यह गलत बात है। मानव जीवन का प्रत्येक क्षण इतना मूल्यवान है कि उसे नष्ट करना बड़ा अपराध है। और फिर "दुर्लभ मानुषं जन्ममूल्य एकोऽपि तत्क्षण"। यानी मनुष्य अपना लक्ष्य निश्चय कर लेते हैं तो उसी में लग जाना चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं। "लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो। हर क्षण उसी का चिंतन करो, उसी का स्वप्न देखो।"

मानव जीवन और आनंद :- बहुत-से लोग आनंद पाना ही जीवन का लक्ष्य समझते हैं। आनंद पाने की इच्छा मनुष्य में स्वाभाविक समझते हैं। यह उसकी मूल प्रवृत्ति है। दुख से हम छुटकारा पाना चाहते हैं। क्योंकि हमारी प्रकृति से मेल नहीं खाती। उपनिषद में भी कहा है "आनदो ब्रह्मेति व्यजानात्" यानी आनंद ब्रह्म है। पर आनंद हम कई तरह से पा सकते हैं जैसे-चोरी करके, शराब पीकर या परोपकार करके। और अगर आनन्द ही मानव जीवन का लक्ष्य है तो खाना, पीना, सोना और मौज उड़ाना यही जीवन होगा। पर क्या इसीलिए कहा गया। ‘‘बड़े भाग मनुष्य तन पावा।" मनुष्य को अपने जीवन में बहुत कुछ करना है। तभी वह जीवन में आगे बढ़ सकता है। श्री सोहनलाल द्विवेदीजी कहते हैं- "अभी दूर है तुमको चलना, निद्रा को न बनाओ पलना।पड़े न चरण विपथ में राही। बैठ श्रांत न पथ में राही। कहीं ऐसा न हो कि मनुष्य अपने जीवन में कुछ कर न पावे और फिर पछताना पड़े. "मैं जीवन में कुछ कर न सका। जग में अंधियारा छाया था, मैं ज्वाला लेकर आया था, मैंने जलकर दी आयु बिता, पर जगती का तम हर न सका। बीता अवसर क्या आयेगा। मन जीवन भर पछताएगा, मरना तो होगा ही मुझको, जब मरना था तब मर न सका। मैं जीवन में कुछ कर न सका।”

विशिष्ट प्रार्थना :- एक ऋषि की प्रार्थना है।
‘‘ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतंगमय।

यानी मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चल। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल। मृत्यु से अमृत में- अमरता में ले चल। इससे हमें मालूम होता है कि हम कहाँ है और कहाँ जाना है। असल में असत्य से सत्य की, अंधकार से प्रकाश की और मृत्यु से अमृत अमरता की यात्रा ही हमारा कर्तव्य और लक्ष्य है।"- श्री राम नाथ सुमन

मानव का प्रमुख लक्ष्य :- मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है लोक-सेवा यानी परोपकारी बीज धूल में मिलकर सुंदर पेड़ को जन्म देता है। इसी तरह मनुष्य को भी अपने आप को मिटाकर दूसरों के लिए जीना है- - मैथिली शरण

"गुप्तजी के शब्दों में 'विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी, मरो किन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी। हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये, मरा नहीं वही कि जो जिया न आप के लिये यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे, वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥ जो दूसरों के अंधकार में सूर्य-प्रकाश पहुँचाते हैं, उनका इस मर्त्यलोक से कभी नाश न होगा। वे अमर हैं।

उपसंहार :- मानव जीवन की सार्थकता परोपकार में है और परोपकार में मानवता से संबंधित सभी गुणों का समावेश हो जाता है। पर परोपकार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उस समय मनुष्य को नकारात्मक विचार छोड़कर सकारात्मक विचार अपनाना होगा। मनुष्य को यह शिकायत नहीं करनी चाहिए कि भगवान ने फूलों के साथ काँटे भी बनाये। पर उसे भगवान को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने काँटों के साथ फूल बनाये हैं। श्री रामनरेश त्रिपाठी जी कहते हैं. -

"कहीं, न आया अंत तुझे तो चलना ही है। जीवन की यह आग जलाकर जलना ही है॥
दम है साथी एक, यही नित आये जाये। तू मत हिम्मत हार, समय कैसा भी आये॥
अपने दम को छोड़कर कर न और की आस। धीरज रख चुपचाप, लक्ष्य पर चलते रहना॥

श्री रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं मनुष्य चाहे कितना ही करे कुछ लोग शिकायत तो करेंगे ही। पर परोपकारी मनुष्य को उनकी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। हमें उनकी बातों पर बिलकुल परवाह नहीं करनी चाहिए।

★★★★★

चित्रकला

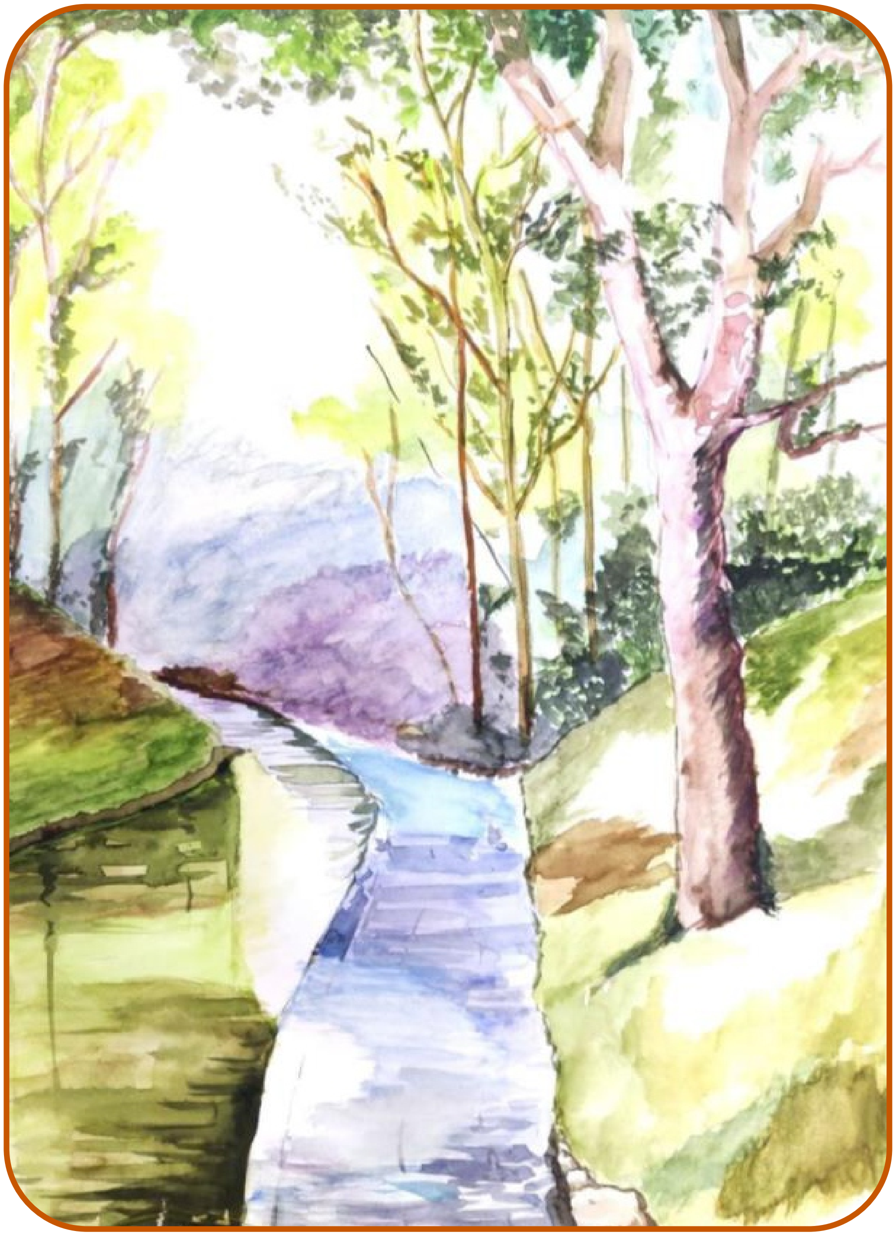

सुश्री पूर्णिमा / व.ले.प.अ.

चित्रकला

सुश्री श्रेया सवने

श्वेता सवने (लेखापरीक्षक) की बहन

चित्रकला

सुश्री रीता प्रमोद,
व. ले. प. अ.

सफर : दर्शक दीर्घा से राजभाषा चैम्पियन तक

श्री कुमार सौरभ
लेखापरीक्षक

सफ़र की शुरुआत होती है साल 2018 से, जब मैंने इस कार्यालय में योगदान दिया था। मार्च का महीना था जब मैंने प्रशासन अनुभाग को रिपोर्ट किया था और अप्रैल के अन्त तक मेरी पदस्थापना अभिलेख अनुभाग में कर दी गयी थी। यहाँ आकर 10 दिन भी नहीं हुए होंगे कि वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी ने मुझे स्थापना अनुभाग (चूँकि यह अनुभाग भी व.ले.प.अ./अभिलेख के ही क्षेत्राधिकार में था) में लंबित कार्य निपटाने का आदेश थमा दिया। काम था कार्यालय के समस्त कर्मचारियों (लगभग 500) के नाम तथा उनके खातों के विवरण PFMS/iBEMS पोर्टल में पंजीकृत करना, ताकि उनके वेतन और अन्य दावे उक्त पोर्टल द्वारा भुगतान किये जा सकें। मैंने काम शुरु किया और अभी दो या तीन दिन ही हुए थे कि पुनः व.ले.प.अ. ने मुझे आदेश दिया कि जितनी जल्दी हो सके यह काम निपटाओ, क्योंकि आगे तुम्हें सीमाशुल्क प्राप्ति लेखापरीक्षा अनुभाग में प्रतिनियुक्त किया जाना है। मैंने मन-ही-मन में सवाल किया कि ये प्रतिनियुक्ति का सिलसिला ख़त्म होगा कि नहीं? जहाँ एक ओर मेरे साथ नियुक्त हुए कर्मचारी मज़े से एक निश्चित अनुभाग में काम का लुत्फ़ उठा रहे थे, वहीं मुझे बंजारा बनाया जा रहा था। यहाँ मैं यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दूँ कि मुझे भांति-भांति के काम मिलने का कोई दुःख नहीं था, उल्टा मुझे हर तरह के काम सीखने का मौक़ा ही मिल रहा था, हालांकि चिंता इस बात की थी कि मुझे स्थायीत्व नहीं मिल रहा था, क्योंकि हो यह रहा था कि मैं एक काम अच्छे से सीख भी नहीं पा रहा था कि अगला काम सीखने और उसको साधने का आदेश-पत्र मेरे हाथ में होता था। ख़ैर, अधिकारी के आदेशानुसार मैंने कार्य की गति बढ़ायी और काम कुछ सात दिनों में पूरा कर दिया। अगले दिन से मुझे नयी जगह नये लोगों के बीच जाना था, सो मैं आदेश-पत्र और झोला उठाकर चल पड़ा सी.शु.प्रा.ले.प. अनुभाग को रिपोर्ट करने। वहाँ जाकर मैंने लगभग तीन महीने काम किया और धीरे-धीरे लगने लगा था कि जैसे मेरे नसीब में स्थायीत्व आने लगा है। मगर ऐसा हो न सका, क्योंकि समय आ गया था मेरे घर वापसी का, अर्थात् अभिलेख अनुभाग में पुनः आगमन का।

मैं परिचय फ़िल्म के जितेन्द्र की तरह मुसाफ़िर हूँ यारों ना घर है ना ठिकाना..... गुनगुनाते हुए वापस अभिलेख अनुभाग में लौट आया। इन सब प्रकरण में अगस्त का महीना आ गया था और मैं अगस्त माह के लगभग अंत में ही मुख्यालय वापस आया था, इस दौरान मुख्यालय में घटित हो रही बहुत सी बातें मुझे पता नहीं चल पाती थीं, क्योंकि सी.शु.प्रा.ले.प. अनुभाग हमारे मुख्यालय से बहुत दूर कस्टम्स ऑफ़िस में स्थापित था। इनमें से एक महत्वपूर्ण चीज़ जो मुझे पता नहीं चल पायी थी, वो यह था कि सितम्बर महीने में हमारे कार्यालय में 14 सितम्बर से 28 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाने वाला था, जिसमें हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कई सारे प्रतियोगिता (हिंदी निबंध प्रतियोगिता, गीत-गायन प्रतियोगिता, टिप्पणी-लेखन प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, अंताक्षरी प्रतियोगिता तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता) का आयोजन होना था। मुख्यालय से दूर होने की वजह से या मेरा नसीब ख़राब होने की वजह से, चाहे जिस भी वजह से हो, लेकिन मुझे इसकी जानकारी नहीं मिल पायी थी और मैं इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु अपना नाम दर्ज नहीं करवा सका था।

इन प्रतियोगिताओं में से प्रश्नोत्तरी और अंताक्षरी प्रतियोगिता एक टीम प्रतियोगिता होती है, लेकिन चूँकि मैं किसी भी अनुभाग का स्थायी कर्मचारी नहीं था, इसलिए मुझे किसी ने (सी.शु.प्रा.ले.प. ने भी, जहाँ मैंने महत्वपूर्ण 3 महीने दिये) अपनी टीम में रखने का विचार नहीं लाया होगा। यहाँ मुझे खुद के स्थायी न होने की बात बहुत खली थी, क्योंकि उसका नुकसान साफ़-साफ़ दिख रहा था। बहरहाल, अपने नसीब को कोसते-कोसते दिन आ गया था 14 सितम्बर 2018 का और हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन हो चुका था। अगले दिन से प्रतियोगिताओं की शुरुआत हुई। चूँकि एकल प्रतियोगिताओं में दर्शकों के लिए कोई जगह नहीं थी, सो मुझे मौक़ा मिला अंताक्षरी प्रतियोगिता में बतौर दर्शक बैठने का और टीमों के बीच रस्साकशी के लुत्फ़ उठाने का। इस प्रतियोगिता की ख़ास बात यह थी कि यदि किसी भी टीम को कोई गीत ना आए तो वह दर्शकों के पास चला जाता था और जिसने भी सही गीत पहचान कर गा दिया उसे पुरस्कार स्वरूप एक कलम दी जाती थी। प्रतियोगिता की समाप्ति तक मेरे जेब में कुल 4 कलम थे। अब चूँकि मैंने गीत पहचान कर गाये थे तो सभी को लगा कि मेरी फ़िल्मी गीतों की जानकारी बहुत गहरी है और उन्हें मेरा गला भी सुरीला लगा। इसलिए सब मुझे कहने लगे कि अरे तुम्हें तो प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए था, कहाँ दर्शकों में बैठे हो! मैंने भी ठाना था कि इस बार तो जानकारी के अभाव में मैं हिस्सा न ले सका, लेकिन अगले साल से ज़रुर भाग लूंगा।

साल बदल चुका था और 2019 का आगमन हो गया था, और फिर आया सितम्बर का वह महीना जिसका मुझे बेसब्री से इंतज़ार था। मैंने प्रतियोगिताओं में भाग लिया और कुल 02 ट्रॉफ़ी (गीत गायन – द्वितीय पुरस्कार और निबंध लेखन – तृतीय पुरस्कार) तथा 04 मेडल प्राप्त किये, जिसमें 02 मेडल टीम प्रतियोगिताओं के थे। अब तक पूरे कार्यालय में किसी एक कर्मचारी ने एक ही वर्ष में इतने पुरस्कार प्राप्त नहीं किये थे, सो मैं प्रसिद्ध हो गया और मेरी बांछें खिल गयीं। बहुत सारे लोग मुझे पहचानने लग गये थे। आगे मैंने वर्ष 2020 में अपने पिछले प्रदर्शन को सुधारते हुए 02 ट्रॉफ़ी (गीत गायन में प्रथम पुरस्कार तथा निबंध लेखन में भी प्रथम पुरस्कार) और 04 मेडल जीते तथा वर्ष 2021 में भी 03 ट्रॉफ़ी (टिप्पण एवं आलेखन में प्रथम, निबंध लेखन में द्वितीय तथा वाद-विवाद में तृतीय) और 05 मेडल अपने नाम किये। मेरी प्रसिद्धी अब कीर्ति में बदलने लगी थी और आलम यह था कि सभी मुझे चिढ़ाने लग गये थे कि तुम हर साल सितम्बर महीने में एक झोला लेकर आया करो ताकि झोला भरकर ट्रॉफ़ी और मेडल ले जा सको। ख़ैर इसी टांग-खिंचाई के बीच आगमन हो चुका था वर्ष 2022 का, इस बार ऐसा हुआ कि मैंने सभी (कुल 06) प्रतियोगिताओं में कोई न कोई पुरस्कार अपने नाम किये थे, अर्थात् मेरी स्ट्राइक रेट इस वर्ष 100 की थी। मेरे नाम के 04 ट्रॉफ़ी (निबंध लेखन तथा टिप्पण एवं आलेखन में प्रथम, आशुभाषण में द्वितीय और गीत-गायन में तृतीय) तो पक्के थे और उनके साथ के मेडल भी, क्योंकि टीम प्रतियोगिताओं के ट्रॉफ़ी आप घर नहीं ले जा सकते; वह जीतने वाले अनुभाग के व.ले.प.अ. के कक्ष में ही रखे जाने की परम्परा है। लेकिन कहानी में एक खुशनुमा ट्विस्ट आया, जिस दिन पुरस्कार समारोह था उसके पूर्व संध्या पर मुझे फ़ोन कॉल आता है और यह बताया जाता है कि चूँकि तुमने हर एक प्रतियोगिता में पुरस्कार अपने नाम किया है, इसलिए राजभाषा अनुभाग ने यह तय किया है कि तुम्हें इस विशिष्ट उपलब्धि हेतु अलग से एक ट्रॉफ़ी विशेष पुरस्कार स्वरुप दिया जाएगा, जिसका नाम 'राजभाषा उत्कृष्ट प्रदर्शक पुरस्कार' होगा। ख़बर पाकर मेरा मन तो जैसे मोर की तरह नाचने लगा।

गदगद होकर मैंने सबसे पहले यह बात माँ को फ़ोन करके बतायी कि देख तेरे लाल को कितना सम्मान मिलने वाला है, उसके लिए कार्यालय को एक अलग पुरस्कार ही गढ़ना पड़ा है, देखना कल मैं 05 ट्रॉफ़ियाँ लेकर आऊंगा। माँ बहुत आह्लादित हुई और मुझे ख़ूब प्यार व आशीर्वाद दिया। पिताजी का सीना भी गर्व से चौड़ा हो गया था और उन्होंने कहाः तुम तो बचपन से ही सभी क्षेत्र में अग्रणी रहे हो, ऐसे ही अपने माँ-बाप का सर ऊँचा करते रहना। उस रात जैसे नींद ही नहीं आ रही थी, इंतज़ार बस इसी पल का था कि कब सवेरा हो और मैं ऑफ़िस चला जाऊं। ख़ैर, रात बीती और दिन बदल गया था, मैं ऑफ़िस पहुँचा तो राजभाषा वाले (सिर्फ़ राजभाषा वाले इसलिए क्योंकि पूरे कार्यालय को परिणाम पता नहीं होता था, क्योंकि यह गुप्त रखा जाता था) मुझे बधाई देने लग गये और हर साल की भांति इस बार भी वही प्रश्न दोहरायाः झोला लाये हो? मैं झेंप गया और चुपचाप उनसे बधाई बटोर कर रोज़ की भांति अपना काम करने लगा। पुरस्कार वितरण दोपहर के बाद होना था। लेकिन दोपहर आते-आते कहानी में एक और ट्विस्ट आ चुका था। हालांकि, यह ट्विस्ट खुशनुमा नहीं था। व.ले.प.अ/राजभाषा ने मुझे बुलाकर यह कहा कि देखो तुमने हालांकि सारे पुरस्कार जीते हैं, लेकिन तुम्हें उन सब के बदले समग्र रुप से एक ही ट्रॉफ़ी राजभाषा उत्कृष्ट प्रदर्शक वाली ही दी जाएगी, क्योंकि यह निर्णय लिया गया है कि प्रतियोगिता में जो भी चौथी पायदान पर रहे हैं, उन्हें भी प्रोत्साहन मिले इस हेतु उन सबको तुम्हारे नाम विजेताओं में से हटा कर एक-एक पुरस्कार दिये जायें। मैंने कहा अब आपलोगों ने मेरे लिए एक अलग पुरस्कार का निर्माण ही किया है तो बाक़ी जो ठीक लगे करिए।

हाँ, तो अब समय हो चला था पुरस्कार वितरण समारोह का और हम सब हॉल में जमा हो गये थे। बारी-बारी से विजेताओं के नाम पुकारे जाने लगे और हर घोषणा के बाद सभी दर्शक आश्चर्य से मेरी ओर मुँह करते और सोचते कि अरे इसको नहीं मिलेगा क्या कोई भी पुरस्कार? सभी प्रतियोगिता के पुरस्कार की घोषणा हो चुकी थी, मेरी जीती हुई ट्रॉफ़ियाँ भी दूसरों को दी जा चुकी थीं और अब बारी थी दर्शकों के मन में उमड़-घुमड़ रहे प्रश्नों के उत्तर की। मंच से यह बोला गया कि आप सब लोगों के चेहरे पर विस्मय स्पष्ट दिख रहा है कि सब पुरस्कार बँट गये लेकिन एक ख़ास नाम अबतक नहीं लिया गया और जिसके नाम इस साल एक भी पुरस्कार नहीं है क्या? तभी परदे पर मेरी तस्वीर उभरती है, जिसमें प्रतियोगिता में मेरी वास्तविक स्थिति दर्शायी गयी थी । दर्शकों की आँखें फटी रह जाती हैं और वे ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ पीटने लग जाते हैं। इसके साथ ही घोषणा होती है उस पुरस्कार की, जो मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है । तालियों की गड़गड़ाहट के बीच माननीय महानिदेशक महोदय के हाथों यह विशेष ट्रॉफ़ी पाना मेरे लिए अत्यंत संतुष्टकारी और आनंददायक था। इस प्रकार मैं अपने कार्यालय का पहला राजभाषा चैम्पियन बना। राजभाषा चैम्पियन का कॉन्सेप्ट जिनका भी हो, मैं उनका हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे भीड़ में एक अलग पहचान दी। मुझे आज भी तत्कालीन निदेशक/आर. ए.-I का भाषण याद है, उन्होंने मेरी तुलना बरगद के पेड़ से की थी। बरगद बहुत विशाल वृक्ष होता है तथा उसकी जड़ें काफी गहरी तथा मज़बूत होती हैं। उन्होंने यह कहा था कि बरगद जहाँ भी होता है, अपने आस-पास किसी और वृक्ष को पनपने नहीं देता, बल्कि अपना ही विस्तार करता जाता है। ठीक उसी प्रकार सौरभ भी है, जिसने सभी प्रतियोगिताओं में एक न एक स्थान सुनिश्चित करके किसी दूसरे को स्थान लेने ही नहीं दिया।

हालांकि, इससे बाक़ी के प्रतियोगी हतोत्साहित न हो जाएँ कि यह लड़का रहेगा तो किसी को आगे जाने नहीं देगा, इसलिए हम सबने यह तय किया कि इसे अलग से एक विशेष पुरस्कार दिया जाए और बाकियों को भी प्रोत्साहन हेतु इसके हिस्से से काटकर एक-एक पुरस्कार दिया जाए। ख़ैर, चाहे जो भी हो, मेरे नाम तो यह उपलब्धि हमेशा रहेगी ही कि मेरे लिए कार्यालय को एक विशेष पुरस्कार गढ़ने के लिए मजबूर होना पड़ा और हिंदी पखवाड़ा के इतिहास में पहला राजभाषा चैम्पियन बनने का गौरव मुझे प्राप्त हुआ। इस गौरवांवित क्षण के लिए कार्यालय तथा विशेष रुप से राजभाषा अनुभाग का सहृदय धन्यवाद! हिंदी का एक सच्चा सिपाही होने के नाते हिंदी की उन्नति के लिए मैं सदैव तत्पर रहूँगा और हिंदी का विनम्र सेवक बना रहूँगा।

अंतर्द्वंद्व

जीवन में रस है घुले हुए,
कहीं कांटे है,कहीं कुसुम खिले,
जो कल थे आज नही है वो,
रिश्ते अब साथ नही है वो,
क्यों कभी- कभी ऐसा होता,
कोई बिछड़े तो यह मन रोता,
कभी लगता है कि समय बहुत,
कभी लगता है,अब समय नही,
कभी लगती मंजिल बहुत पास,
कभी लगती होगी दूर कहीं,

डर लगता ऐसी बातों से,
कभी लगता,बोझ है यह जीवन,
सब नश्वर है सब झूठा है,
कभी लगे परिश्रम अथक किया,
अब भाग्य ही शायद रूठा है,
कभी लगता हम कितने गरीब,
बिन गाड़ी नौकर,बदनसीब,
कभी देख व्यथित हो जाता मन,

शूल मध्य मुस्काकर जो, हर लेता है,
हर मन की चितवन,
अपनी भीनी भीनी खुशबू से
सुरभित करता रहता मन,
जीवन लंबा कितना भी हो,
इस बात का कोई अर्थ नहीं,
एक लम्हे में सौ साल जिएं,उलझन में गवाएं,व्यर्थ नही,
जीवन सदा गतिशील रहे,बस कर्मयोग के पथ पर,
निश्चित ध्वज आरोहित होगा,उत्सेधो के रथ पर।

कभी डोर टूटकर आशा की कर देती है मन को उदास,
कभी एक लहर खुशियों की आकर दे जाती रवि का प्रकाश,
जीवन है क्या,यह परिभाषित करना,है शायद कठिन काम,
यदि सफल तो लाख टके का है,पर असफलता का नहीं है दाम,
कभी लगने लगता मोह बहुत स्वजनों से,रिश्ते- नातों से,
कभी यह भी नही रहेंगे तो..

जब भूखी काया विचरण करती,नंगे पाँव बिना बसन,
होटल, फैशन और सिनेमा लगने लगते हैं चाह कभी,
दुधमुहे और भूखे बच्चों की दहला देती आह कभी,
क्या सत्य है,क्या मिथ्या है, जग में सबकी अपनी भाषा है,
हर इक का अपना तर्क अलग,सबकी अपनी परिभाषा है,
शायद यह जीवन बहुत सरल,पर जीना एक परीक्षा है,
सुख क्यों जाते है पता नहीं पर दुख का कारण इच्छा है,
जीवन तो सीखो उस प्रसून से,
जिसका एक दिवस का जीवन,

डॉ. दिनेश सिंह
(श्री रणजीत सिंह (स. ले. प. आ.) के भाई)

★★★★★

मुक्तक

प्रेम है,जिंदगी कुछ सुना कीजिए,
दुख को साथी सफर का बना लीजिए,
दर्द का भार ढोने से क्या फायदा,
गीत है जिंदगी,गुनगुना लीजिए,

उलझनों में न जीवन गवाँ दीजिए,
वेदना को न ऐसे हवा दीजिए,
सुख के महलों के ही
पास में प्यार से दुख की
छोटी सी कुटिया बना लीजिए,

कल सितारों भरी रात हो या न हो,
कुछ सुनाने की औकात हो या न हो,
आइए जिंदगी की ही बातें करें,
आप सबसे मुलाकात हो या न हो,

बीज नफरत के न ऐसे बो दीजिए,
अपनी औकात,खुद ही न खो दीजिए,
तुम विभीषण बनो किंतु रावण नही,
इसलिए प्रेम में दिल भिगो लीजिए।

कामना अपनी चादर बिछाती रहे,
नित नई वेदना को बुलाती रहे,
भावनाओं की माला गले डालकर,
जिंदगी के नए गीत गाती रहें,

आसमां के किनारे नहीं चाहिए,
मुक्ति के भी किनारे नहीं चाहिए,
मात्र विश्वास अपना हमें दीजिए,
और कोई सहारे नहीं चाहिए,

डॉ. दिनेश सिंह
(श्री रणजीत सिंह (स. ले. प. आ.) के भाई)

★★★★★

टाइम मशीन विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

पुस्तक की आत्मकथा

श्री एन दलवी
लेखापरीक्षक

मैं पुस्तक हूँ। जिस रुप में आपको आज दिखाई देती हूँ प्राचीन काल में मेरा यह स्वरुप नही था। गुरु शिष्य को मौखिक ज्ञान देते थे। उस समय तक कागज का आविष्कार ही नही हुआ था। शिष्य सुनकर ज्ञान ग्रहण करते थे। धीरे-धीरे इस कार्य में कठिनाई उत्पन्न होने लगी। ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए उसे लिपिबद्ध करना आवश्यक हो गया। तब ऋषियों ने भोजपत्र पर लिखना आरम्भ किया। यह कागज का प्रथम स्वरुप था।

भोजनपत्र आज भी देखने को मिलते हैं। हमारी अति प्राचीन साहित्य भोजपत्रों और ताड़तत्रों पर ही लिखा मिलता है। मुझे कागज का रुप देने के लिए घास-फूस,बांस के टुकड़े पुराने कपडे के चीथडे को कूट पीस कर गलाया जाता है उसकी लुगदी तैयार करके मुझे मशीनों के नीचे दबाया जाता है, तब मैं कागज के रुप में आपके सामने आती हूँ।

मेरा स्वरुप तैयार हो जाने पर मुझे लेखक के पास लिखने के लिए भेजा जाता है। वहाँ मैं प्रकाशक के पास और फिर प्रेस में जाती हूँ। प्रेस में मुझे छापेखाने की मशीनों में भेजा जाता है। छापेखाने से निकलकर मैं जिल्द बनाने वाले के हाथों में जाती हूँ।

वहाँ मुझे काटकर, सुइयों से छेद करके मुझे सिला जाता है। तब मेरा पूर्ण स्वरुप बनता है। उसके प्रकाशक मुझे उठाकर अपनी दुकान पर ले जाता है और छोटे ब़डे पुस्तक विक्रेताओं के हाथों में बेंच दिया जाता है। मैं केवल एक ही विषय के लिए नहीं लिखी जाती हूँ अपितु मेरा क्षेत्र विस्तृत है। वर्तमान युग में तो मेरी बहुत ही मांग है। मुझे नाटक, कहानी, भूगोल, इतिहास, गणित, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, साइंस आदि के रुप में देखा जा सकता है।

बडे-बड़े पुस्तकालयो में मुझे सम्भाल कर रखा जाता है। यदि मुझे कोई फाडने की चेष्टा करे तो उसे दण्ड भी दिया जाता है। और पुस्तकालय से निकाल दिया जाता है। दुबारा वहां बैठकर पढ़ने की इजाजत नहीं दी जाती। मुझमें विद्या की देवी सरस्वती वास करती है। अध्यापन में रुचि रखने वालों की मैं मित्र बन जाती हूँ। वह मुझे बार-बार पढकर अपना मनोरंजन करते हैं। मैं भी विवेक जागृत करती हूँ। उनकी बुद्धि से अज्ञान रुपी अन्धकार को निकाल बाहर करती हूँ। नर्सरी से लेकर कॉलेज में पढ़ने वाले के लिए मैं उनकी सफलता की कुंजी हूँ। वे मुझे पढ़ककर धीरे-धीरे आगे बढते हैं और अपने लक्ष्य पर पहुँचकर जीविका कमाने में लग जाते हैं। जो मेरा सही इस्तेमाल नहीं करते वह प्रगति की दौंड़ में पिछड़ जाते हैं। आगे बढ़ने का अवसर खो देते हैं और मित्रों, रिश्तेदारों में बेइज्जत होते हैं। मैं केवल स्कूल और कॉलेज की पाठ्य पुस्तक ही नहीं हूँ, अपितु हिन्दुओं की गीता, मुसलमानों की कुरान, सिखों का गुरु ग्रन्थ साहिब, ईसाइयों की बाइबिल हूँ। ये लोग मुझे धार्मिक ग्रन्थ मानकर मेरी पूजा करते है। मुझे फाडना या फेंकना पाप समझा जाता है। मैं नही चाहती कि लोग मुझे फाडकर फेंक दे या रद्दी की टोकरी में डाल दें। जहाँ मैं अपने भविष्य के बारे में पड़ी-पड़ी यह सोच रही हूँ कि कल मेरा क्या होगा क्या मूंगफली वाला, चाटवाला, सब्जीवाला या चने वाला उठाकर ले जाएगा कोई लिफाफे बनाने वाले को देकर लिफाफे बनवाएगा या कोई गरीब विद्या प्रेमी आधी कीमत देकर मुझे खरीद लेगा।

मैं चाहती हूँ कि लोग मुझे फाडे नहीं, मुझे घर के एक कोने में सही ढंग से रखें और इस्तेमाल करें। जो मेरा आदर करता है मैं उसका आदर करती हूँ। भविष्य में महान व्यक्तियों की श्रेणी में लाकर खडा कर देती हूँ। जहां वह अपनी विद्वता का परिचय देकर दूसरों से आदर पाता है। कितने व्यक्ति परिश्रम करके मुझे आप तक पहुँचाते है। आप मेरा सदुपयोग करें मैं केवल यही आशा करती हूँ।

★★★★★

हमारी एक अनमोल रातें

श्री रजनीश वर्मा
स.ले.प.अ.

न वो कदम बढ़ा रही थी,
न हम कदम बढ़ा रहे थे।
बंद कमरे की बिस्तर,
हमारी राहें देख रही थी।।

रात हो गई थी,
लोग सो रहे थे।
बढ़े कदम किसके,
हम इंतजार कर रहे थे।।

बंद कमरे की ओर,
सहसा कदम बढ़ी उसकी।
दरवाजा खुलने की आहट,
मेरे कानों में पड़ी थी।।

अदब से उठा कदम मेरा,
मैं उसके पीछे चल पड़ा था।
लगाकर दरवाजे की घुंडी,
मैं बिस्तर पर जा पड़ा था।।

घूँघट गिरा के बैठी,
न वो कुछ बोल रही थी।
तकिए सिरहाने बैठे,
न मैं कुछ बोल रहा था।।

सेज पर सजी फूलें,
खुशबू बिखेर रही थी।
पलकें गिरा कर नयना,
आंखमिचौली खेल रही थी।।

दिल की बेचैनी,
अब बढ़ी जा रही थी।
उठाओ अब घूँघट,
मोहब्बत ये कह रही थी।।

उठाया जब घूँघट,
अधर खिल रही थी।
चंद्रमुखी का मुखड़ा
आभा बिखेर रही थी।।

आलिंगन करके उसको,
आगोश में कर रखा था।
रात चढ़ चुकी थी,
अब मैं सो रहा था ।।

★★★★★

कार्यकुशलता के साथ व्यवहारकुशलता भी जरूरी

श्री कुमार सौरभ
लेखापरीक्षक

अंग्रेज़ी भाषा की वैसे तो कई खामियां हैं जैसे अंग्रेज़ लोग अपने चाचा मामा फूफा मौसा सभी को अंकल ही बुलाते हैं, ठीक वैसे ही चाची मामी बुआ और मौसी को आंटी बुलाते हैं। उनके पास कई सारी अभिव्यक्तियों के लिए अलग-अलग शब्द नहीं हैं, जिनमें से प्रमुख शब्द है You. जहाँ हमारे यहाँ, यानि कि भारत में बड़ों के लिए आप और छोटों के लिए तुम शब्द की व्यवस्था है, वहीं वे बड़ों को भी you बुलाते हैं और छोटों को भी you. अजीब विरोधाभास है ना! You कहकर बुलाने से सामने वाले को क्या ही पता चलेगा कि यह व्यक्ति मुझे कौन सा वाला you बुला रहा है, सम्मान वाला या छोटा वाला? भारत में तो बल्कि यदि हम यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि फ़लाँ व्यक्ति मुझसे उम्र में बड़ा है या छोटा, तो हम उन्हें आप कहकर ही संबोधित करते हैं। ऐसा शिष्टाचार कहता है कि जब भ्रम की स्थिति हो तो हमेशा ऐसा कृत्य किया जाए कि उसके परिणाम से हमें शर्मिंदा ना होना पड़े।

अब आप सोच रहे होंगे कि मैंने अंग्रेज़ी के इस ख़ास शब्द पर ही कटाक्ष क्यूँ किया जिसमें आदरसूचक अभिव्यक्ति निहित है? अभी स्पष्ट हो जाएगा, आपको मेरे साथ विचारों के सागर में तनिक गहरे उतरना होगा। जी, तो मैंने शुरुवात में बात की थी भारत की, उसका एक ख़ास मक़सद है। भारत एक शालीन और सभ्य देश है। यहाँ किसी को भी नीचा दिखाने की परम्परा नहीं रही है। भारत की भूमि तो वसुधैव कुटुंबकम् विचारधारा की जननी है। अब जब कि हमने पूरी वसुधा को परिवार मान लिया है, तो परिवार के सदस्यों को उनके वय और रिश्तों के आधार पर यथोचित सम्मान और स्नेह देना भी हमारा दायित्व है। परिवार में बड़ों को; चाहे वो उम्र में हों या रिश्तों में, हम उन्हें आप कहकर ही बुलाते हैं, उनका नाम नहीं लेते या अगर नाम लेना पड़ गया तो नाम के आगे आदरस्वरूप जी लगा देते हैं। यहाँ तक कि कई बार ऐसा भी अवसर आता है जब उम्र में छोटा व्यक्ति हमसे रिश्ते में बड़ा बन जाता है, तब परंपरानुसार हम उस छोटे वय के व्यक्ति को भी आदरस्वरुप आप या जी कहकर बुलाते हैं। छोटों को स्नेह देना है इसलिए उनको स्नेहपूर्वक उनके नाम से ही बुलाते हैं।

यकीन मानिए अभी तक आप सागर के किनारे पर ही खड़े हैं, भीतर तो गये ही नहीं है। अब धीरे-धीरे मैं आपको नीचे गहराई की ओर ले चलता हूँ। ज़रा पारिवारिक व्यवस्था को थोड़ी देर के लिए किनारे रखिए और रुख करिए कार्यालय की तरफ़। हाँ जी, तो कार्यालय में भी बहुत से कर्मचारी होते हैं। ज़ाहिर है उनमें भी वरिष्ठता का कोई क्रम तो निश्चित ही होगा, अर्थात् कोई बड़ा तो कोई छोटा होगा। किंतु कार्यालय कोई परिवार थोड़े न है कि यहां भी उम्र एक पैमाना होगा यह तय करने के लिए कि यहां कौन बड़ा होगा और कौन छोटा होगा? हाँ, यह बात अलग है कि उम्र में बड़े कर्मचारियों को उनके निचले पद पर ध्यान दिए बिना अमूमन हम उन्हें नाम से नहीं ही बुलाते हैं; सुविधानुसार उन्हें भी सर/मैडम या जी कहकर बुलाते हैं। लेकिन फिर भी एक ख़ास पैमाना तो तय ही होता है कर्मचारियों की वरीयता स्थिति दिखाने के लिए। अजी यहां तो ग्रेडेशन लिस्ट नाम की एक व्यवस्था है, जिसके तहत यह तय होता है कि कौन बड़ा है और कौन छोटा है। अर्थात् कार्यालय में जिसने पहले ज्वाइन किया वो बड़ा यानी सीनियर और जिसने बाद में किया वो हुआ जूनियर यानी छोटा। कुछ तकनीकियों को छोड़ दें तो मोटे तौर पर तो यही व्यवस्था है। लेकिन फिर से याद दिला दूँ कि कार्यालय कोई परिवार तो है नहीं कि पद में यहाँ एक बार जो बड़ा हो गया वह बड़ा ही रहा और एक बार जो छोटा हो गया वह छोटा ही रहा। यहाँ तरक्की का भी तो खेला चलता है; कभी-कभी वैसे कर्मचारी जो आप से पीछे कार्यालय में आए हों, वो विभागीय व्यवस्था के अधीन तरक्की पाकर आप से आगे निकल जाते हैं।

ख़ैर वे आगे निकल गये तो इसमें उनका क्या ही दोष है? लेकिन अब वो दुखद समय आता है जब आपसे जो पीछे था वह आगे निकलने के बाद कैसे रंग बदलता है यह देखने का। कल तक जो आपको सर या मैडम कह कर बुलाता था, छोटे बड़े सब काम के लिए आपके ही शरण में आता था, आपसे ही उसने कार्यालय की सब बारीकियां सारे गुर सीखे हों, आज वह आपको अचानक आपके नाम से संबोधित करने लग जाएगा और आप अवाक होकर उसे देखते रह जाएंगे। वह दंभ से आपको तुम या तू भी बोलना शुरु कर देगा। उसे यह दंभ होने लगता है कि अरे अब मैं छोटा थोड़े ही रहा कि पहले की तरह ही सबको सर या मैडम बुलाता रहूँ। ग्रेडेशन लिस्ट की सीढ़ियां चढ़कर एक समय का आपका मातहत कर्मचारी व्यावहारिकता की सीढ़ियों से डिग्रेड होता जाता है और आपको ऐसा महसूस करवाने लगता है मानो उसका प्रमोशन नहीं आपका डिमोशन हुआ हो! मगर ऐसा करते वक्त वो भूल जाता है कि नादानी में वो स्वयं की किरकिरी करवा रहा है और अपना कितना नुकसान करवा रहा है। एक मशहूर शेर है - जो खानदानी रईस हैं वो मिज़ाज रखते हैं नर्म अपना, तुम्हारा लहजा बता रहा है, तुम्हारी दौलत नई-नई है। तो वो संपोले जो अभी अभी अपनी केंचुली छोड़कर नई-नई गोरी चिकनी चमड़ी पाकर इतरा रहे हैं, वो यह भूल गए हैं कि पदोन्नत होकर उनके पास स्रोत और संसाधन तो यकीनन बढ़ जायेंगे, लेकिन उनके पूर्ववर्ती बड़ों जितना वो अनुभव जिसके इस्तेमाल से बड़ी-बड़ी समस्याओं को चुटकी में निपटाया जाता है, कहां से ला पाएंगे? उन्हें यह भ्रम होता है कि वे तरक्की पाकर विभाग द्वारा पुरस्कृत हुए हैं, जबकि असलियत यह है कि वे पुरस्कृत नहीं किये गये हैं, बल्कि विभाग द्वारा एक पद धारण करने को अधिकृत मात्र हुए हैं। इसे ऐसे समझिए – पुरस्कार पर सिर्फ़ और सिर्फ़ विजेता का अधिकार होता है, यानि कि विजेता को एक बार पुरस्कार मिल गया इसका मतलब अब वही पुरस्कार किसी अन्य को नही दिया जा सकता। पुरस्कार की सीमा होती है कि तीन लोगों को मिलेंगे या पाँच को, यह निर्णायक मंडल अपने विवेकाधिकार से निर्णय लेता है। किंतु, पदोन्नति कोई पुरस्कार नहीं है कि एक बार एक कर्मचारी को मिल गया तो फिर किसी अन्य कर्मचारी को वही पद नहीं मिल सकता। एक-न-एक दिन अपने-अपने समय से सभी पदोन्नत हो ही जाएंगे। तो फिर व्यर्थ का घमंड किसलिए? क्यों मदांध होकर दूसरों को नीचा दिखाना? अंग्रेज़ मत बनिए, भारतीय बने रहिए। उनके पास तो अभिव्यक्तियों के लिए शब्द ही कम हैं सो उनका गुनाह थोड़ा कम हो जाता है, किंतु यदि हम हिंदी जैसी संपन्न और परिपूर्ण भाषा की गोद में पल बढ़कर भी जानबूझकर ग़लत या अनुचित शब्द का उपयोग करते हैं तो यकीन मानिए यह आपकी ओछी मानसिकता का परिचायक ही है। वर्तमान में आप हो गए हैं बड़े, रहिए, ईश्वर की कृपा से आप और बड़े बनिए मगर जिससे सीख सीखकर आप यहाँ तक पहुंचे हैं, उन्हें कभी भी अपमानित ना करें। कार्यालय में जब कोई अधिकारी भी नया-नया आता है तो अपना सहायक चुनते वक्त सबसे अनुभवी कर्मचारी पर ही दांव लगाता है; उस समय वो अधिकारी यह नहीं सोचता कि उसका सहायक तो उसका मातहत है, बल्कि यह भरोसा करता है कि उस सहायक के अनुभव का सहारा पाकर वह भी शीघ्रता से काम काज में सामंजस्य बिठा पाएगा। संगठन की भलाई इसी में है कि बिना पद की तरफ़ दृष्टि किये सबका यथोचित सम्मान होना चाहिए। यही उस संगठन की ख़ूबसूरती भी है। वरना परिपक्व कर्मचारियों के कार्यालय को अल्हड़ विद्यार्थियों का कॉलेज बनने में देर नहीं लगेगी।

अब तक आप गहराई में उतर आए होंगे, लेकिन वहाँ मुझको नहीं पाएंगे। मैं आपको गहराई में छोड़कर किनारे पर आ गया हूँ और यह देखने के इंतज़ार में खड़ा हूँ कि इस गहराई में से कौन मोतियां उठा कर लाता है और कौन पत्थर उठा लाता है? जो मोतियां लाए हों तो स्वयं के लिए आभूषण बना लें और जो पत्थर लेकर चले आए हों तो क्या करना है आप भलीभांति जानते हैं। माथा तो आपके पास भी है ही।

★★★★★

वर्तनी की अशुद्धियाँ

श्री रंजय कुमार सिंह
लेखापरीक्षक

विचारों की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से होती है। परन्तु शब्दों के गलत उच्चारण शब्दों के अर्थ बदल देते है। पिता-पीता, चिता-चीता, कलि-कली, नियत- नीयत जैसे बहुत सारे शब्द इसके उदाहरण है।

हिन्दी भाषा में वर्तनी की अधिकांश अशुद्धियों के पीछे शब्दों के गलत उच्चारण का हाथ होता है। यदि कोई व्यक्ति किसी शब्द का उच्चारण सही नहीं करता है तो पूरी संभावना है कि लिखने में उससे गलती होगी। हिन्दी में जैसे बोलते हैं वैसे ही लिखते हैं। सही शब्द बीमार या बीमारी का उच्चारण बिमार या बिमारी कर देने से शब्दों में वर्तनी दोष रह जाते हैं। इसी तरह तबीयत का गलत उच्चारण तबियत कर देने से भी यह गलती रह जाती है।

गलती को किसी भी स्तर पर किसी भी उम्र में सुधारा जा सकता है। हमारे एक मित्र विज्ञान के शिक्षक है पहले उनसे साधारण से साधारण शब्द की वर्तनी में गलती हो जाया करती थी। बाद में उनका हिन्दी प्रेम ऐसा जगा कि अब उनसे ऐसी गलती नहीं के बराबर होती है। एक हमारे मित्र बहुत दिनों से श्रीमति को श्रीमती लिखते आ रहे है। वह यह मानने को तैयार नहीं कि श्रीमति सही है। शब्द कोश दिखाने पर भी वह लेकिन, परंतु करते रहते है।

किसी तरह की आदत चाहे वह सही हो या गलत, देर से छूटती है। इस कारण अच्छी आदतों को ही अपनाना श्रेयस्कर होता है। बाद में वे ही संस्कार बन जाती है। शिक्षा और संस्कार परस्पर पूरक हैं। इंटरनेट कम्प्यूटर युग ने बच्चों के लिखने की आदत छुड़ा दी है। यदा कदा लिखना हुआ तो शब्दों में वर्तनी की त्रुटि तो होगी ही, लिखावट भी इतनी खराब होती है कि उनका ठीक से पढ़ पाना मुश्किल होता है। समयाभाव के कारण बहुत लोग जल्दी-जल्दी घसीट कर लिखते हैं। अब बताइये, किसी को पत्र लिखते समय जल्दी में महोदय या महाशय लिख जाय तो हो गया न काम चौपट। महोदय को बड़े पेट वाले और महाशय को अधिक खाने वाले के संबोधन से उन्हे कैसा लगेगा, यह तो वे ही जानें।

हिन्दी वर्णमाला में 'र' वर्ण एक से अधिक रूपों में प्रयोग होता है, यथा- ब्रजेन्द्र, बृजेन्द्र, कर्म, कर्तव्य, अनुग्रह, अनुगृहीत आदि। 'र' के इन प्रयोगों से प्रायः लोग परेशानी में पड़ जाते हैं। यही कारण है कि आशीर्वाद, दुर्व्यवहार, प्रकृति, कृति, कीर्ति जैसे शब्द प्रायः गलत लिख जाते हैं। ऐसे सभी शब्दों के बार-बार अभ्यास से वर्तनी में सुधार लाया जा सकता है।

हिन्दी में अनेक शब्द उपसर्ग तथा प्रत्यय की सहायता से बनाये जाते हैं। जैसे इत प्रत्यय जुड़कर अंकुर से अंकुरित, आनंद से आनंदित तथा ईय प्रत्यय जुड़ कर भारत से भारतीय, राष्ट्र से राष्ट्रीय, लेखक से लेखकीय बनता है। परन्तु 'इक' प्रत्यय शब्द के अंत में लगने से यह शब्द के प्रथम स्वर को भी प्रभावित करता है। मूल शब्द के प्रथम स्वर आ-आ में इ ई-ऐ में उ ऊ- औ में बदल जाते हैं। यथा परिवार से परिवारिक सप्ताह से साप्ताहिक संकेत से सांकेतिक तर्क से तार्किक, नीति से नैतिक, पुराण से पौराणिक, भूलोग से भौगोलिक शब्द बनते हैं।

वर्तनीगत अशुद्धियों के कई प्रकार और कारण हैं अपनी भाषा का शुद्ध प्रयोग हम सबका आवश्यक कर्तव्य है।

★★★★★

पिता

पिता एक उम्मीद है, एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कोई मर्म है ।।

पिता संघर्ष की आँधियों में हौंसलो की दीवार है
परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार है,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।।

पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी है
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी है
सपनो को पूरा करने में लगने वाली जान हैं
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।।

पिता ज़मीर है पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है,
कहने को सब ऊपर वाला देता है
पर ख़ुदा का ही एक रूप पिता का शरीर है।।

सुश्री संगीता लक्ष्मण दोडमणी
पत्नी श्री लक्ष्मण दोडमणी

★★★★★

सुश्री पूर्णिमा / व.ले.प.अ.

राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस पर शपथ ग्रहण करते हुए कर्मचारी एवं अधिकारीगण

महिला सशक्तिकरण पर अनमोल विचार

- "नारी को अबला कहना उसका अपमान करना हैं ... ||| **महात्मा गाँधी**"
- "स्त्री पृथ्वी की भांति धैर्यवान है, शांतिसम्पन्न है, सहिष्णु हैं ... ||| **प्रेमचंद**"
- "स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है, जितना प्रकाश अँधेरे से ... ||| **प्रेमचंद**"
- "मैं किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं ने जो प्रगति हांसिल की है उससे मापता हूँ ... ||| **बी आर अम्बेडकर**"
- "नारी पुरुष की गुलाम नहीं, सहधर्मिणी, मित्र, अर्धांगिनी (पत्नी) है ... ||| **महात्मा गाँधी**"
- "स्त्री का शारीरिक सामर्थ्य भले ही कम हो, उसकी वाणी में असीम सामर्थ्य है ... ||| **लक्ष्मीबाई केलकर**"
- "कोई भी देश व समाज तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक नारियां उपेक्षित, शोषित एवं पिछड़ी रहेंगी ... ||| "
- "यदि एक पुरुष को शिक्षित किया तो केवल वही पुरुष ही शिक्षित होता है जबकि यदि किसी नारी को शिक्षित करते है तो दो परिवारों के उनके पीढ़ी को शिक्षित करते है ... ||| "
- "महिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार होती हैं ... ||| **चेर**"
- "नारी सदैव अजेय रही हैं ... ||| **महादेवी वर्मा**"
- " महिलाएं दुनिया में प्रतिभा का सबसे बड़ा अप्रयुक्त भंडार हैं ... ||| **हिलेरी क्लिंटन**"
- "किसी को भी मत कहने दो कि तुम कमजोर हो क्योंकि तुम एक औरत हो ... ||| **मैरी कॉम** "
- "यह बात महिलाओं को अभी भी सीखनी है कि कोई भी आपको शक्ति नहीं देता है। आप बस इसे लेना सीखो ... ||| **रोजऐनी बर्र**"
- "महिलाओं को पुरुषों की तरह, असंभव करने की कोशिश करनी चाहिए, और जब वे असफल हो, उनकी असफलता दूसरों के लिए एक चुनौती होनी चाहिए ... ||| **अमेर्लिया इरहार्ट**"
- "आज बालिकाओं को पशुता के विरुद्ध लड़ने वाली वीरांगनायें, समाज की अग्रदुतियाँ और संसार को हिलाने वाली देवियाँ बनाना है ... ||| **महात्मा गाँधी**"
- "नारियाँ इसलिए अधिकार चाहती हैं कि उनका सदुपयोग करें और पुरूषों को उनका दुरूपयोग करने से रोकें ... ||| **प्रेमचंद**"
- "स्त्री पुरुष की साथी, समान मानसिक क्षमता वाली होती हैं ... ||| **महात्मा गाँधी**"
- नारीवाद महिलाओं को मजबूत बनाने के बारे में नहीं है। महिलाएं पहले से ही मजबूत हैं। यह दुनिया के उस ताकत के तरीके को बदलने के बारे में है ||| **जी डी एंडरसन**"
- कोई भी देश तरक्की के शिखर पर नहीं पहुँच सकता जब तक उसकी महिलाएं कन्धा से कन्धा मिला कर ना चलें।
- "परिभाषानुसार एक आवाज के साथ एक औरत, एक मजबूत महिला होती है ... ||| **मेलिंडा गेट्स**"
- "एक स्त्री ही ऐसी होती है जो बड़े से बड़े दुखो के पहाड़ को आसानी से ढो लेती है ... |||
- "अपनी बेटियों का सम्मान करें। वे सम्माननीय हैं ... ||| **मलाला यूसूफ़जई**"

- ❈ "जब महिलाएं अर्थव्यवस्था में भाग लेती हैं, तो सभी को लाभ होता है ...||| **हिलेरी क्लिंटन**"
- ❈ "नारीवादी वास्तव में महिलाओं और पुरुषों में समानता और पूर्ण मानवता की पहचान है ...||| **ग्लोरिया स्टाइनम**"
- ❈ "अगर महिलाएं अपनी शक्ति को समझती हैं और उनका अभ्यास करती हैं तो वे दुनिया को बदल सकती हैं ...||| **एमिली टैफ्ट डगलस** "
- ❈ "प्रकृति ने महिलाओं को इतनी शक्ति दी है कि क़ानून ने समझदारी से उन्हें इतना कम दिया है ...||| **सैम्युएल जोंसन** "
- ❈ "महिलाएं समाज की असली आर्किटेक्ट हैं ...||| **हैरियट बीचर स्टोव**"
- ❈ "लैंगिक समानता तभी पहुंच पाएगी जब हम महिलाओं को सशक्त बना पाएंगे ...||| **मिशेल बाचेलेट**"
- ❈ "नारी जाति को खाली हाथ कभी नहीं बैठना चाहिए ...||| **शरतचंद**"
- ❈ "महिलाओं के सशक्तीकरण से ज्यादा प्रभावी विकास का कोई साधन नहीं है ...||| **कोफी अन्नान**"
- ❈ "भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों की रक्षा भारतीय नारी ने अनोखे ढंग से सर्वदा की है, आगे भी वही रक्षिका होगी ...||| **महादेवी वर्मा**"
- ❈ "नारी शांति की प्रतिमा हैं, इसे उच्च पद से नीचे गिराना केवल जंगलीपन है ...||| **रफोडियस**"
- ❈ "मानवाधिकारों के सम्मान के साथ महिला सशक्तीकरण परस्पर जुड़ा हुआ है ...||| **महनाज़ अफ़ख़ामी**"
- ❈ "समाज को बदलने का सबसे तेज़ तरीका यह है कि दुनिया की महिलाओं को लामबंद किया जाय ...||| **चार्ल्स मलिक** "
- ❈ "महिलाएं पुरुषों से अधिक बुद्धिमान होती हैं क्योंकि वो जानती कम और समझती ज्यादा हैं ...||| **जेम्स थर्बर**"
- ❈ "लोगो को जगाने के लिए महिलाओं का जाग्रत होना जरुरी है ...||| **प. जवाहरलाल नेहरू**"
- ❈ "स्त्री की उन्नति पर ही राष्ट्र की उन्नति निर्भर है ...|||"
- ❈ भारतीय महिलायें जिस तरह से मल्टीटास्किंग करती हैं, वे इतनी सशक्त हैं कि आगे उनको और सशक्तिकरण की जरूरत नहीं है.||| **नरेन्द्र मोदी**"
- ❈ महिलाएं दुनिया में प्रतिभा का वो सबसे बड़ा भंडार हैं जिसका इस्तेमाल नहीं हुआ। "||| **हिलेरी क्लिंटन** "
- ❈ सबसे सफल महिलाएं वे हैं जिन्होंने अपनी किस्मत खुद बनाई है||| **अन्ना विंटोर** "
- ❈ यदि आप कुछ कहना चाहते हैं, तो एक पुरुष से पूछें; अगर आप कुछ करना चाहते हैं, तो एक महिला से पूछें।||| **मार्गरेट थैचर** "
- ❈ "दुनिया में दो शक्तियाँ हैं, एक तलवार और दूसरी कलम। दोनों से शक्तिशाली एक तीसरी शक्ति है, महिलाओं की।" ||| **मलाला यूसूफ़जई** "

श्री के.पी.यादव
महानिदेशक

★★★★★

खेल-कूद के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों की झलकियाँ

श्री नचिकेत पालव(ले.प.) ने मुंबई में आयोजित द संडे फुटबॉल लीग (पुरुष सीजन 4) में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बेस्ट प्लेयर ऑफ़ द टूर्नामेंट, दो मैच के मैन ऑफ़ द मैच तथा स्टाईस्ट प्लेयर ऑफ़ द मैच के भी विजेता

सुश्री कर्मा मीना, ले.प. (आई ए एंड ए डी पश्चिम जोन बैडमिंटन टूर्नामेंट 2022-23 के मिश्रित युगल की विजेता)

सह्याद्रि